अबु तालिब पर तहक़ीक़

मुसन्निफ़

इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत,
इमाम अहमद रज़ा खान رحمۃ اللہ علیہ

हिंदी :

नबीरा -ए- आला हज़रत, शहज़ादा -ए- क़मरुल उलमा
मौलाना उमर रज़ा खा़न
क़ादरी नूरी बरेलवी

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

मुसन्निफ़

इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत, علیہ رحمۃ اللہ
इमाम अहमद रज़ा खान

हिंदी :

नबीरा -ए- आला हज़रत, शहज़ादा -ए- क़मरुल उलमा
मौलाना उमर रज़ा खा़न
क़ादरी नूरी बरेलवी

Contents

मसअला : अज़ बदायूं 1294 हिजरी बइबारत ए सवाल व सानियन बिइजमाल अज़ अहमदाबाद गुजरात मुहल्ला जमालपुर क़रीब मस्जिद कांच मुरसलहु जमाअत ए अहले सुन्नत साकिनान ए अहमदाबाद 6 जुमादल ऊला 1316 हिजरी

क्या फ़रमाते हैं उलमा ए दीन इस मसअला में कि ज़ैद अबू तालिब को काफ़िर और अबू लहब व इब्लीस का मुमासिल कहता है और अम्र बदीं दलाइल इससे इंकार करता है कि उन्होंने जनाब सरवर ए आलम सलल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की किफ़ालत व नुसरत व हिमायत व महब्बत बदर्जा ए ग़ायत की और नात शरीफ़ में क़साइद लिखे, हुज़ूर ने उनके लिए इस्तग़फ़ार फ़रमाई और जामिउल उसूल में है कि अहले बैत के नज़दीक वह मुसलमान मरे। शेख़ मुहक़्क़िक़ अलैहिर रहमा ने शरह सफ़रुस सआदत में फ़रमाया,

کم ازان نہ باشد کہ دریں مسئلہ توقف کنند و صرفہ نگہ دارند۔

और मवाहिबुल लदुन्निया में एक वसीयत नामा उनका बनाम क़ुरैश मनक़ूल जो हर्फ़न हर्फ़न उनके इस्लाम पर शाहिद। इन दोनों में कौन हक़ पर है और अबू तालिब को मिस्ल अबू लहब व इब्लीस समझना कैसा और उनके कुफ़्र में कोई हदीस सहीह वारिद हुई या नहीं, बर तक़दीर ए सानी उन्हें ज़ामिन व कफ़ील रसूल उल्लाह सलल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का समझकर रदि अल्लाहु तआला अन्हु कहें या मिस्ल कुफ़्फ़ार समझें।

بینوا بسند الکتاب توجروا من الملك الوهاب بیوم القیٰمة و الحساب

अलजवाब :

بسم الله الرحمٰن الرحيم ـ اللهم ربنا و لوجهك الحمد احق ما قال العبد وكلنا لك عبد لا مانع لما اعطيت و لا معطى لما منعت و لا راد لما قضيت و لا ينفع ذا الجد منك الجد لك الحمد على ما هديت و عفوت و عافيت و منحت و اوليت تباركت و تعاليت سبحٰنك رب البيت مستجيرين بجمال وجهك الكريم من عذابك الاليم و شاهدين بان لا حول و لا قوة الا بالله العلى العظيم انت العزيز الغالب لا يعجزكها رب و لا يدرك ما منعت طالب ما عليك من واجب قدرت الاقدار و دورت الادوار و كتبت فى الاسفار ما انت كاتب يعمل عامل بعمل الجنان فيظن الظان من الانس و الجان ان سيد خلها و كان قد كان فيغلبه الكتاب فاذا هو خائب و يفعل فاعل افعال النيران فيحسب الجيران و من طلع عليه النيران ان سيوردها و كان قد حان فيدرك القدر فاذا هو تائب ارسلت خير خلقك و سراج افقك محمد االمبعوث بيسرك و رفقك بشيرا و نذيرا و سراجا منيرا ملأ ضؤوه المشارق و المغارب و عم نوره الاباعد و الاقارب و حرم بقرب حضرته من حضرة قربه ابو طالب فلك الحجة السامية صل على محمد صلاة نامية و على اٰله و صحبه و اهله و حزبه صلاة ترضيك و ترضيه و تحفظ المصلى عما يرديه و بارك وسلم ابدا ابدا والحمد لله دائما سرمدا آمين آمين يا ارحم الراحمين

इसमें शक नहीं कि अबू तालिब तमाम उम्र हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन सय्यिदुल अव्वलीन वल आख़िरीन सय्यिदुल अबरार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिहि वसल्लम इला यौमिल क़रार की हिफ़्ज व हिमायत व किफ़ालत व नुसरत में मसरुफ़ रहे, अपनी औलाद से ज़्यादा हुज़ूर को अज़ीज़ रखा और उस वक़्त में साथ दिया कि एक आलम हुज़ूर का दुश्मन ए जाँ हो गया था और हुज़ूर की महब्बत में अपने तमाम अज़ीज़ों क़रीबीयों से मुख़ालिफ़त गवारा की, सब को छोड़ देना क़बूल किया, कोई दक़ीक़ा ग़मगुसारी व जाँ निसारी का ना मरई न रखा और यक़ीनन जानते थे कि हुज़ूर अफ़ज़लुल मुरसलीन सलल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, उन पर ईमान लाने में जन्नत अब्दी और तकज़ीब में जहन्नम दाइमी है, बनू हाशिम को मरते वक़्त वसीयत की कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तस्दीक़ करो फ़लाह पाओगे, नात शरीफ़ में क़साइद उनसे मनक़ूल और उनमें बराहे फ़िरासत वह उमूर ज़िक्र किए कि उस वक़्त तक वाक़े न हुए थे, बाद ए बिअसत शरीफ़ उनका ज़ुहूर हुआ, यह सब अहवाल मुताला ए अहादीस व मुराजिअत ए कुतुब ए सीयर से ज़ाहिर, एक शे'र उनके क़सीदे का सहीह बुख़ारी शरीफ़ में भी मर्वी,

و ابیض یستسقی الغمام بوجهہ ـ ثمال الیتامی عصمۃ للارامل

मुहम्मद इब्न ए इस्हाक़ ताबई साहिब ए सियर व मग़ाज़ी ने यह क़सीदा ब तमामिहा नक़ल किया जिसमें एक सौ दस 110 बैतें मद्ह ए जलील व नात ए मनीअ पर मुश्तमिल हैं।

शेख़ मुहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी क़ुद्दसा सिर्रुहु शरह सिरात ए मुस्तक़ीम में इस क़सीदा की निस्बत फ़रमाते हैं,

دلالت صریح دارو بر کمال محبت و نہایت نبوت او انتہی۔

मगर मुजर्रद इन उमूर से ईमान साबित नहीं होता। काश यह अफ़आल व अक़वाल उनसे हालत ए इस्लाम में सादिर होते तो सय्यिदुना अब्बास बल्कि ज़ाहिरन सय्यिदुना हमज़ा रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से भी अफ़ज़ल क़रार पाते और अफ़ज़लुल आमाम ए हुज़ूर अफ़ज़लुल अनाम अलैहि व अला आलिहि व अफ़ज़लुस सलात वस्सलाम कहलाए जाते।

तक़दीर ए इलाही ने बर बिना उस हिकमत के जिसे वह जाने या उसका रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उन्हें गिरोह ए मुसलिमीन व ग़ुलामान ए शफ़ीउल मुज़निबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में शुमार किया जाना मंज़ूर न फ़रमाया,

فاعتبروا یا اولی الابصار۔

सिर्फ़ मारिफ़त गो कैसी ही कमाल के साथ हो ईमान नहीं, दानिस्तन व शिनाख़्तन और चीज़ है और इज़आन व गिरवीदन और, कम काफ़िर थे जिन्हें रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सच्चे पैग़म्बर होने का यक़ीन न था,

جَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ۔

और उलमा ए अहले किताब तो उमुमन जज़्म ए कुल्ली रखते थे हत्ता कि यह अम्र उनके नज़दीक कल अयाँ से भी ज़ाइद था,

मुआइना में बसर ग़लती भी करती है और यहां किसी तरह का शुबह व इहतिमाल न था,

قال جل و علا ۔ يَعرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعرِفُوْنَ ابْنَآءَهُمْ ۔و قال عز من قائل، فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ فَلَعنَةُ اللهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۔ و قال جل ذكره، يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْباً عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰةِ وَالْاِنْجِيْلِ ۔

बाज़ कोर चश्म बद बातिन वहाबिया ए अस्र कि इसमें कलाम करते और कहते हैं अगर अहले किताब के यहाँ हुज़ूर का ज़िक्र ए रिसालत होता तो ईमान क्यों न लाते, नुसूस ए क़ातिआ से इंकार और ख़ुदा व रसूल की तकज़ीब और यहूद व नसारा की हिमायत व तस्दीक़ करने वाले हैं,

اعوذ بالله من وسواس الشيطان۔

शरह ए अक़ाइद ए नसफ़ी में है,

ليست حقيقة التصديق ان تقع فى القلب نسبة الصدق الى الخبر و المخبر من غير اذعان و قبول بل هو اذعان و قبول لذلك بحيث يقع عليه اسم التسليم على ما صرح به الامام الغزالى ۔

उसी में है,

بعض القدرية ذهب الى ان الايمان هو المعرفة و اطبق علماؤنا على فساده لان اهل الكتاب كانوا يعرفون نبوة محمد صلى الله تعالىٰ عليه وسلم كما كانوا يعرفون ابناء هم مع القطع بكفرهم لعدم التصديق

و لان من الكفار من كان يعرف الحق يقينا و انما كان ينكر عنادا و استكبارا قال الله تعالىٰ جَحَدُوْا بِهَا وَ اسْتَيْقَنَتهَا اَنْفُسُهُمْ ـ

मुहक़्क़िक़ दव्वाफ़ी शरह ए अक़ाइद ए अज़ुदी में फ़रमाते हैं,

التلفظ بكامتى شهادتين مع القدرة عليه شرط فمن اخل به فهو كافر مخلد فى النار و لا تنفعه المعرفة القلبية من غير اذعان و قبول فان من كفار من كان يعرف الحق يقينا و كان انكاره عنادا و استكبارا كما قال الله تعالىٰ وَ جَحَدُوْا بِهَا وَ اسْتَيْقَنَتهَا اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا و عُلُوًا ـ

आयात ए क़ुरआनीया व अहादीस ए सहीहा मुतावाफ़िरा व मुताज़ाफ़िरा से अबू तालिब का कुफ्र पर मरना और दम ए वापसी ईमान लाने से इंकार करना और आक़िबत कार असहाब ए नार से होना ऐसे रौशन सुबूत से साबित जिससे किसी सुन्नी को मजाल ए दम ज़दन नहीं। हम यहाँ कलाम को सात फ़स्ल पर मुनक़सम करें।

फ़सल ए अव्वल (1) - आयात ए क़ुरआनीया

आयत - 1 :

قال الله تبارك و تعالىٰ. اِنَّكَ لَا تَهْدِىْ مَنْ اَحبَبْتَ وَ لٰكِنَّ اللهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ وَ هُوَ اَعلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ۔

ऐ नबी! तुम हिदायत नहीं देते जिसे दोस्त रखो, हाँ ख़ुदा हिदायत देता है जिसे चाहे, वह ख़ूब जानता है जो राह पाने वाले हैं। मुफ़स्सिरीन का इज्मा है कि यह आयत ए करीमा अबू तालिब के हक़ में नाज़िल हुई। मआलिमुत तन्ज़ील में है,

نزلت فی ابی طالب۔

जलालैन में है,

نزل فی حرصه صلی الله تعالی علیه وسلم علی ایمان عمه ابی طالب۔

मदारिकुत तन्ज़ील में है,

قال الزجاج اجمع المفسرون انها نزلت فی ابی طالب۔

कश्शाफ़ ए ज़मख़शरी व तफ़सीर ए कबीर में है,

قال الزجاج اجمع المسلمون انها نزلت فی ابی طالب۔

इमाम नववी शरह सहीह मुस्लिम शरीफ़ किताबुल ईमान में फ़रमाते हैं,

اجمع المفسرون علی انما نزلت فی ابی طالب و کذا نقل اجماعهم علی هذا الزجاج وغیره۔

मिरक़ात शरह ए मिश्कात में है,

لقوله تعالیٰ فی حقه باتفاق المفسرین اِنَّكَ لَا تَهْدِیْ مَنْ اَحبَبْتَ۔

हदीस - 1 :

सहीह हदीस में इस आयत ए करीमा का सबब ए नुज़ूल यूँ मज़कूर कि जब हुज़ूर ए अक़दस सय्यिदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अबू तालिब से मरते वक़्त कलमा पढ़ने को इरशाद फ़रमाया, साफ़ इंकार किया और कहा मुझे क़ुरैश ऐब लगाएंगे कि मौत की सख़्ती से घबराकर मुसलमान हो गया वरना हुज़ूर की ख़ुशी कर देता। इस पर रब्बुल इज़्ज़त तबारक व तआला ने यह आयत ए करीमा उतारी यानी ऐ हबीब तुम इसका ग़म न करो, तुम अपना मन्सब ए तबलीग़ अदा कर चुके, हिदायत देना और दिल में नूर ए ईमान पैदा करना यह तुम्हारा फ़ेअल नहीं, अल्लाह तआला के इख़्तियार में है और उसे ख़ूब मालूम है कि किसे यह दौलत देगा और किसे महरूम रखेगा। सहीह मुस्लिम शरीफ़ किताबुल ईमान व जामे तिर्मिज़ी किताबुत तफ़सीर में सय्यिदुना अबू हुरैरा रदि अल्लाहु तआला अन्हु से मर्वि,

قال قال رسول للہ صلی للہ تعالیٰ علیہ وسلم لعمہ (زاد مسلم فی اخری عند الموت) قل لا الہ الا للہ اشھد لك بھا یوم القیٰمۃ۔ قال لو لا ان تعیرنی قریش یقولون انما حملہ علی ذلك الجزع لاقررت بھا عینك فانزل للہ عزوجل اِنَّكَ لَا تَھْدِیْ مَنْ اَحبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ یَھْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ۔

मआलिम व मदारिक व बैज़ावी व इरशादुल अक़्लुस सलीम व ख़ाज़िन व फ़ुतुहात ए इलाहीया वग़ैरह तफ़ासीर में इसी हदीस का हासिल इस आयत के नीचे ज़िक्र किया।

आयत - 2 :

قال جل جلاله. مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ آمَنُوْا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَ لَوْ كَانُوْا اُوْلِىْ قُرْبٰى مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ـ

रवा नहीं नबी और ईमान वालों को कि इस्तग़फ़ार करें मुशरिकों के लिए अगरचे वह अपने क़राबत वाले हों बाद उसके कि उन पर ज़ाहिर हो चुका कि वह भड़कती आग में जाने वाले हैं। यह आयत ए करीमा भी अबू तालिब के हक़ में नाज़िल हुई।

तफ़सीर ए नसफ़ी में है,

هم عليه الصلوة و السلام ان يستغفر لابى طالب فنزل ما كان للنبى ـ

जलालैन में है,

نزل فى استغفاره صلى الله تعالى عليه وسلم لعمه ابى طالب ـ

इमाम ऐनी उम्दतुल क़ारी शरह ए सहीह बुख़ारी में फ़रमाते हैं,

قال الواحدى سمعت ابا عثمان الحيرى سمعت ابا الحسن بن مقسم سمعت ابا اسحق الزجاج يقول فى هذه الاية اجمع المفسرون انها نزلت فى ابى طالب ـ

यानी वाहिदी ने अपनी तफ़सीर में ब सनद ख़ुद अबू इसहाक़ ज़ुजाज से रिवायत की कि मुफ़स्सिरीन का इज्मा है कि यह आयत अबू तालिब के हक़ में उतरी।

اقول هكذا اثره ههنا و المعروف من الزجاج قوله هذا فى الاية الاولى كما سمعت و المذكور ههنا فى المعالم وغيرها فليراجع تفسير الواحدى فلعله اراد اتفاق الاكثرين و لم يلق للخلاف بالا لكونه خلاف ما ثبت فى الصحيح۔

बैज़ावी में पहला क़ौल इस आयत का नुज़ूल दरबारा ए अबी तालिब लिखा। अल्लामा शहाब ख़फ़ाजी इसकी शरह इनायतुल काज़ी व किफ़ायतुर राज़ी में फ़रमाते हैं,

هو الصحيح فى سبب النزول۔

यानी यही सहीह है। इस तरह इसकी तसहीह फ़ुतुहुल गैब व इरशादुश सारी में की है और फ़रमाया यही हक़ है।

كما سيأتى و هذه التصحيحات ايضاً اية الخلاف كما ليس بخاف۔

हदीस - 2 :

सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम व सुनन नसाई में है,

و اللفظ محمد قال حدثنا محمود فذكر بسنده عن سعيد بن المسيب عن ابيه رضى الله تعالىٰ عنهما ان ابا طالب لما حضرته الوفاة دخل عليها النبى صلى الله تعالىٰ عليه وسلم و عنده ابو جهل فقال اى عم قل لا اله الا الله كلمة احاج لك بها عند الله۔ فقال ابو جهل و عبد الله بن أمية. يا ابا طالب اترغب عن ملة عبد المطلب فلم يزالا يكلمانه حتى

قال اخر شيئ كلمهم به على ملة عبد المطلب (زاد البخاری فی الجنائز و تفسير سورة القصص كمثل مسلم فی الایمان و ابی ان یقول لا اله الا الله) فقال النبی صلی الله تعالیٰ علیه وسلم لاستغفرن لك ما لم انه عنه، فنزلت مَا كَانَ لِلنَّبِيِ وَ الَّذِيْنَ آمَنُوْا اَنْ يَسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ اُوْلِیْ قُرْبٰی مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصحبُ الْجَحِيْمِ و نزلت اِنَّكَ لَا تَهْدِیْ مَنْ اَحبَبْتَ۔

इस हदीस ए जलील से वाज़ेह कि अबू तालिब ने वक़्त ए मर्ग कलमा ए तय्यबा से साफ़ इंकार कर दिया और अबू जहल लईन के इग़वा से हुज़ूर ए अक़दस सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इरशाद क़बूल न किया, हुज़ूर रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस पर भी वादा फ़रमाया कि जब तक अल्लाह तआला मुझे मना न फ़रमाएगा मैं तेरे लिए इस्तग़फ़ार करूंगा, मौला सुब्हानुहु व तआला ने यह दोनों आयतें उतारीं और अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अबू तालिब के लिए इस्तग़फ़ार से मना किया और साफ़ इरशाद फ़रमाया कि मुशरिकों दोज़ख़ियों के लिए इस्तग़फ़ार जाइज़ नहीं।

نسأل الله العفو و العافية، اما تزييف الزمخشری نزول الاية فيه بان موت ابی طالب كان قبل الهجرة و هذا آخر ما نزل بالمدينة اه فمردود بما فی ارشاد الساری عن الطيبی عن التقريب انه يجوز ان النبی صلی الله تعالیٰ عليه وسلم كان يستغفر لابی طالب الی حين نزولها و

التشدید مع الکفار انما ظهر فی هذه السورة اه، قال اعنی القسطلانی قال فی فتوح الغیب و هذا هو الحق و روایة نزولها فی ابی طالب هی الصحیحة اه و کذا رده الامام الرازی فی الکبیر و قال العلامة الخفاجی فی عنایة القاضی بعد نقل کلام التقریب اعتمده من بعده من الشراح و لا ینافیه قوله فی الحدیث فنزلت لامتداد استغفاره له الی نزولها اول ان الفاء للسببیة بدون تعقیب اه۔ اقول و الدلیل علی الاستمرار و استدامة الاستغفار قول سید الابرار صلی اللّٰہ تعالیٰ علیه وسلم لاستغفرن لك ما لم انه عنه فهذا مقام الجزم دون التجویز و الاستظهار علا ان الامام الجلیل الجلال السیوطی فی کتاب الاتقان عقد فصل البیان ما نزل من ایات السور المکیة بالمدینة و بالعکس و ذکر فیه عن بعضهم ان ایة مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ ایة مکیة نزلت فی قوله صلی اللّٰہ تعالیٰ علیه وسلم لابی طالب لاستغفرن لك ما لم انه عنه و اقره علیه فعلی هذا یزهق الاشکال من راسه ثم ان لفظ البخاری فی کتاب التفسیر فانزل اللّٰہ بعد ذلك قال الحافظ فی فتح الباری الظاهر نزولها بعده بمدة الروایة التفسیر اه و هذا ایضا یطیع الشبهة من راسها افاد هذین العلامة الزرقانی فی شرح المواهب و بعد اللتیا و التی اذ قد افصح الحدیث الصحیح بنزولها فیه فکیف ترد الصحاح بالهوسات۔

आयत - 3 :

قال عز مجدہ، وَ هُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَ يَنْئَوْنَ عَنْهُ وَ اِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّا اَنْفُسَهُمْ وَ مَا يَشْعُرُوْنَ ۔

वह इस नबी से औरों को रोकते और बाज़ रखते हैं और ख़ुद इस पर ईमान लाने से बचते और दूर रहते हैं और इसके बाइस वह ख़ुद अपनी ही जानों को हलाक करते हैं और उन्हें शऊर नहीं। यानी जानबूझकर जो बे शऊरों के जैसे काम करे उससे बढ़कर बे शऊर कौन। सुल्तानुल मुफ़स्सिरीन सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा और उनके तलमीज़ ए रशीद सय्यिदुना इमाम ए आज़म के उस्ताद ए मजीद इमाम अता इब्न ए अबी रबाह व मुक़ातिल वग़ैरहुम मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं, यह आयत अबू तालिब के बाब में उतरी। तफ़सीर ए इमाम बग़वी शरहुस सुन्नाह में है,

قال ابن عباس و مقاتل نزلت فی ابی طالب کان ینھی الناس عن اذی النبی صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم و یمنعھم وینأی عن الایمان به ای یبعد ۔

अनवारुत तंज़ील में है,

ینھون عن التعرض الرسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم وینأون عنه فلا یؤمنون به کابی طالب ۔

हदीस - 3 : फ़रयाबी और अब्दुर रज़ाक़ अपने मुसन्निफ़ और सईद इब्न ए मंसूर सुनन में और अब्द इब्न ए हमीद और इब्न ए जरीर व

इब्न ए मुन्ज़िर व इब्न ए अबी हातिम व तबरानी व अबुश शेख़ व इब्न ए मरदविया और हाकिम मुस्तदरक में ब इफ़ादा ए तसहीह और बैहक़ी दलाइलुन नबूवाह में हज़रत अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से इसकी तफ़सीर में रावी,

قال نزلت فی ابی طالب کان ینھی عن المشرکین ان یؤذوا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم یتباعد عما جاء بہ۔

यानी यह आयत अबू तालिब के बारे में उतरी कि वह काफ़िरों को ख़ुद हुज़ूर सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला आलिहि वसल्लम की ईज़ा से मना करते, बाज़ रखते और हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने से दूर रहते।

قال فی مفاتیح الغیب فیہ قولان منھم من قال المراد انھم ینھون عن التصدیق نبوتہ و الاقرار برسالتہ و قال عطاء و مقاتل نزلت فی ابی طالب کان ینھی قریشا عن ایذاء النبی علیہ الصلوۃ و السلام ثم یتباعد عنہ و لا یتبعہ علی دینہ و القول الاول اشبہ لوجھین الاول ان جمیع الایات المتقدمۃ علی ھذہ الایۃ تقتضی ذم طریقتھم فلذلك قولہ وَ هُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ ینبغی ان یکون محمولا علی امر مذموم فلو حملناہ علی ان ابا طالب کان ینھی عن ایذاءہ لما حصل ھذا النظم و الثانی انہ تعالی قال بعد ذلك وَاِنْ يُهْلِكُوْنَ اِلَّا اَنْفُسَهُمْ یعنی بہ ما تقدم ذکرہ ولا یلیق ذلک ان یکون المراد من قولہ وَ هُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ النھی عن اذیتہ لان ذلك حسن لا یوجب الھلاك اھ۔ اقول اصل الذم

النسائی و قد تشدد بالنھی فان الذنب بعد العلم اشد منہ حین الجھل فذکر النھی لابانۃ شدۃ ما یلحقہ من الذم فی ذلک و عظمۃ ما یعتریہ من الوزر فیما ھنالک فان العلم حجۃ للہ مالک و علیک الا تری الی قولہ صلی للہ تعالیٰ علیہ وسلم فی ابی طالب و لو لا انا لکان فی الدرک الاسفل من النار کما سیأتی مع ما علم من حمایتہ و کفالتہ و نصرتہ و محبتہ للنبی صلی للہ تعالیٰ علیہ وسلم طول عمرہ فانما کاد یکون فی الدرک الاسفل لو لا شفاعۃ رسول للہ صلی للہ تعالیٰ علیہ وسلم لما ابی الایمان مع کما العرفان فالایۃ علی وزان قولہ تعالی تَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِ وَ تَنْسَوْنَ اَنفُسَکُم وَ اَنْتُمْ تَتلُوْنَ الْکِتٰبَ اَفَلَا تَعقِلُوْنَ۔ فذکر فی سیاق الذم امرھم بالبر و تلاوتھم الکتاب و انما القصد الی و تلاوتھم الکتاب و انما القصد الی نسیانھم انفسھم و ذکر ھذین للتسجیل بل قال جل ذکرہ یَاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۔ کَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللہِ اِنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعُلُوْنَ ۔ فشدد النکیر علی القول من دون عمل و ان کان القول خیرا فی نفسہ قال فی معالم التنزیل قال المفسرون ان المؤمنین قالوا لو نعلم ای الاعمال احب الی اللہ عزوجل لعملناہ و لبذلنا فیہ اموالنا و انفسنا فانزل عزوجل اِنَّ اللہَ یُحِبُ الَّذِیْنَ یُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِیْلِہٖ صَفًا فابتلوا بذلک یوم احد فولوا مدبرین فانزل اللہ تعالی لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۔ اھ و بہ ینحل الوجھان لمن انصف لا جرم ان قال الخفاجی فی العنایۃ بعد

نقله کلام الامام فیه نظر اھ۔ بالجملة فعطاء اعلم منا و منکم
باسالیب القرآن و نظمه فضلا عن ھذا الحبر العظیم الذی قد فاق
اکثر الامة فی علم القرآن و فھمه و ﷲ تعالیٰ اعلم ۔

फ़सल ए दुवम (2) - अहादीस

हदीस - 4 : सहीहैन व मुस्नद ए इमाम अहमद में हज़रत सय्यिदुना अब्बास अम्मे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से है,

انه قال للنبی صلی ﷲ تعالیٰ علیه وسلم ما اغنیت عن عمك فوالله کان یحوطك و یغضب لك قال ھو فی ضحضاح من نار و لو لا انا لکان فی الدرك الاسفل من النار و فی روایة وجدته غمرات من النار فاخرجته الی ضحضاح ۔

यानी उन्होंने ख़िदमत ए अक़दस ए हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में अर्ज़ की, हुज़ूर ने अपने चचा अबू तालिब को क्या नफ़्अ दिया, ख़ुदा की क़सम वह हुज़ूर की हिमायत करता और हुज़ूर के लिए लोगों से लड़ता झगड़ता था। फ़रमाया, मैंने उसे सरापा आग में डूबा हुआ पाया तो उसे खींचकर पांव तक आग में कर दिया और अगर मैं न होता तो जहन्नम के सबसे नीचे तबक़े में होता। इमाम इब्न ए हजर फ़तहुल बारी शरह ए सहीह बुख़ारी में फ़रमाते हैं,

يؤيد الخصوصية انه بعد ان امتنع شفع له حتى خفف له العذاب بالنسبة لغيره۔

यानी नबी ए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़ुसूसियत से हुआ कि अबू तालिब ने ब आंके ईमान लाने से इंकार किया फिर भी हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत ने इतना काम दिया कि ब निस्बत बाक़ी काफ़िरों के अज़ाब हल्का हो गया।

हदीस - 5 : सहीहैन व मुसनद इमाम अहमद में अबू सईद ख़ुदरी रदि अल्लाहु तआला अन्हु से है,

ان رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم ذكر عنده عمه ابو طالب فقال لعله تنفعه شفاعتى يوم القيمة فيجعل فى ضحضاح من النار يبلغ كعبيه يغلى منه دماغه۔

यानी हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सामने अबू तालिब का ज़िक्र आया, फ़रमाया, मैं उम्मीद करता हूँ कि रोज़ क़यामत मेरी शफ़ाअत उसे यह नफ़्अ देगी कि जहन्नम में पांव तक की आग में कर दिया जाएगा जो उसके टख़नों तक होगी जिससे उसका दिमाग़ जोश मारेगा। यूनुस बक्र ए बुकैर ने हदीस मुहम्मद इब्न ए इसहाक़ से यूँ रिवायत किया,

يغلى منه دماغه حتى يسيل على قدميه۔

उसका भेजा उबलकर पांव पर गिरेगा। उमदतुल क़ारी व इरशादुस सारी शुरूह ए सहीह बुख़ारी व मुवाहिब ए लदुन्नियाह वग़ैरह में इमाम सुहेली से मनक़ूल,

الحکمۃ فیہ ان ابا طالب کان تابعا لرسول للہ صلی للہ تعالیٰ علیہ وسلم لجملتہ الا انہ استمر ثابت القدم علی دین قومہ فسلط العذاب علی قدمیہ خاصۃ لتثبیتہ ایاھما علی دین قومہ۔

यानी अबू तालिब के पांव तक आग रहने में हिकमत यह है कि अल्लाह तआला जज़ा हमशक्ल ए अमल देता है, अबू तालिब का सारा बदन हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हिमायत में सर्फ़ रहा, मिल्लत ए कुफ्र पर साबित क़दमी ने पांव पर अज़ाब मुसल्लत किया। इसी तरह तैसीर शरह ए जामे सग़ीर वग़ैरह में है।

हदीस - 6 : बज़्ज़ार व अबू याला व इब्न ए अदी व तमाम हज़रत जाबिर इब्न ए अब्दुल्लाह अंसारी रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रावी,

قیل للنبی صلی للہ تعالیٰ علیہ وسلم ھل نفعت ابا طالب قال اخرجتہ من غمرۃ جھنم الی ضحضاح منھا۔

यानी हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ की गई, हुज़ूर ने अबू तालिब को कुछ नफ़्अ दिया। फ़रमाया, मैंने उसे दोज़ख़ के ग़र्क़ से पांव की आग में खींच लिया।

इमाम ऐनी उम्दाह में फ़रमाते हैं,

فان قلت اعمال الكفرة هباء منثورا لافائدة فيها قلت هذا النفع من بركة رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم و خصائصه ۔

इसका भी वही मतलब है कि अबू तालिब को यह नफ़्अ मिलना सिर्फ़ हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बरकत से है वरना काफ़िरों के आमाल तो ग़ुबार हैं हवा पर उड़ाए हुए।

हदीस - 7 : तबरानी हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रावी,

ان الحارث بن ہشام اتی النبی صلی الله تعالىٰ عليه وسلم يوم حجة الوداع فقال يا رسول الله انی كنت علی صلة الرحم و الاحسان الی الجار و ايواء اليتيم و اطعام الضيف و اطعام المسكين و كل هذا قد كان يفعله هشام بن المغيرة فما ظنك به يا رسول الله فقال رسول الله صلی الله تعالىٰ عليه وسلم كل قبر ای لا يشهد صاحبه ان لا اله الا الله فهو جذوة من النار و قد وجدت عمی ابا طالب فی طمطام من النار فاخرجه الله لمكانه منی و احسانه الی فجعله فی ضحضاح من النار ۔

यानी हारिस इब्न ए हिशाम रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने रोज़ ए हज्जतुल विदा हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह! मैं इन बातों पर अमल करता हूँ, रिश्तादारों से नेक सुलूक, हमसाया से अच्छा बर्ताव, यतीम को जगह

देना, मेहमान को मेहमानी देना, मोहताज को खाना खिलाना। और मेरा बाप हिशाम यह सब काम करता था तो हुज़ूर को उसकी निस्बत क्या गुमान है। फ़रमाया, जो क़ब्र बने जिसका मुर्दा ला इलाहा इल्ललाह न मानता हो वह दोज़ख़ का अंगारा है, मैंने अपने चचा अबू तालिब को सर से ऊँची आग में पाया, मेरी क़राबत व ख़िदमत के बाइस अल्लाह तआला ने उसे वहाँ से निकालकर पांव तक आग में कर दिया। मजमअ ए बिहारुल अनवार में ब अलामत ए काफ़ इमाम किरमानी शारह ए बुख़ारी से मनक़ूल,

نفع ابا طالب اعماله ببرکته صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم و ان کان اعمال الکفرۃ هباء منثورا۔

यानी नबी ए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बरकत से अबू तालिब के आमाल नफ़्अ दिए गए वरना काफ़िरों के काम तो निरे बर्बाद होते हैं।

हदीस - 8 : इमाम अहमद मुसनद और इमाम बुख़ारी व मुस्लिम अपनी सहाह में हज़रत अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रावी रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं,

اهون اهل النار عذابا ابو طالب و هو منتعل بنعلین من نار یغلی منهما دماغه۔

बेशक दोज़ख़ियों में सबसे कम अज़ाब अबू तालिब पर है, वह आग के दो जूते पहने हुए है जिससे उसका दिमाग़ खौलता है।

नीज़ सहीहैन में नौमान इब्न ए बशीर रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा की रिवायत से है रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

ان اهون اهل النار عذابا من له نعلان و شراكان من نار يغلى منهما دماغه كما يغلى المرجل ما يرٰى ان احدا اشد منه عذابا و انه لاهونهم عذابا۔

दोज़ख़ में सबसे हल्के अज़ाब वाला वह है जिसे आग के दो जूते और दो तस्मे पहनाए जाएंगे जिनसे उसका दिमाग़ देग की तरह जोश मारेगा वह यह समझेगा कि सबसे ज़्यादा सख़्त अज़ाब उसी पर है हालांकि उस पर सबसे हल्का अज़ाब होगा। इस हदीस में इमाम अहमद की रिवायत यूँ है,

يوضع فى اخمص قدميه جمرتان يغلى منهما دماغه۔

उसके तलवों में अंगारे रखे जाएंगे जिससे भेजा उबलेगा।

और सहीहैन में अनस रदि अल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत से है, रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं,

يقول الله لاهون اهل النار عذابا يوم القيمة لو ان لك ما فى الارض من شيئ اكنت تفتدى به فيقول نعم فيقول اردت منك اهون من هذا و انت فى صلب ادم ان لا تشرك لى شيئا فابيته ان لا تشرك بى۔

दोज़ख़ियों में सबसे ज़्यादा हल्के अज़ाब वाले से अल्लाह तआला फ़रमाएगा तमाम ज़मीन में जो कुछ है अगर तेरी मिल्क होता

तो क्या उसे अपने फ़िदया में देकर अज़ाब से नजात मांगने पर राज़ी होगा। वह अर्ज़ करेगा, हाँ। फ़रमाएगा, मैंने तुझसे रोज़ ए मिसाक़ जबकि तू पुश्त ए आदम में था इससे भी हल्की और आसान बात चाही थी कि किसी को मेरा शरीक न करना मगर तूने न माना बग़ैर मेरा शरीक ठहराए हुए।

इस हदीस से भी अबू तालिब का शिर्क पर मरना साबित है। किताबुल ख़मीस फ़ी अहवाल ए अनफ़स ए नफ़ीस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में है,

قیل ان النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مسح ابا طالب بعد موتہ و انسی تحت قدمیہ و لذا ینتعل بنعلین من النار۔

यानी कहा गया कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने बाद ए मर्ग अबू तालिब के बदन पर दस्त ए अक़दस फेर दिया था मगर तलवों पर हाथ फेरना याद न रहा इसलिए अबू तालिब को रोज़ ए क़यामत आग के दो जूते पहनाए जाएंगे। बाक़ी जिस्म ब बरकत ए दस्त ए अक़दस महफ़ूज़ रहेगा।

हदीस - 9 : इमाम शाफ़ई व इमाम अहमद व इसहाक़ इब्न राहविया व अबू दाऊद तयालसी अपनी मसानीद और इब्न ए साद तबक़ात और अबू बक्र इब्न ए अबी शैबा मुसन्निफ़ और अबू दाऊद व नसाई सुनन और इब्न ए ख़ुज़ैमा अपनी सहीह और इब्नुल जारूद मुन्तक़ा और मरूज़ी किताबुल जनाइज़ और बज़्ज़ार व अबू याला मसानीद और बैहक़ी सुनन में ब तरीक़ ए अदीदा हज़रत सय्यिदुना अमीरुल मोमिनीन मौला अली कर्रमाल्लाहु तआला वजहहुल करीम से रावी,

قال قلت للنبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ان عمك الشیخ الضال قد مات قال اذھب فوار اباك۔

यानी मैंने हुज़ूर ए अक़दस सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह! हुज़ूर का चचा वह बुड्ढा गुमराह मर गया। फ़रमाया, जा उसे दबा आ। इब्न ए अबी शैबा की रिवायत में है, मौला अली ने अर्ज़ की,

ان عمك الشیخ الکافر قد مات فما تری فیہ۔ قال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اری ان تغسلہ و امرہ بالغسل۔

हुज़ूर का चचा वह बुड्ढा काफ़िर मर गया, उसके बारे में हुज़ूर की क्या राय है यानी ग़ुस्ल वग़ैरह दिया जाए या नहीं। सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, नहलाकर दबा दो। इमाम शाफ़ई की रिवायत में है,

فقلت یا رسول اللہ انہ مات مشرکا قال اذھب فوارہ۔

मैंने अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह! वह तो मुशरिक मरा। फ़रमाया, जाओ दबा आओ।

इमामुल अईम्मा इब्न ए ख़ुज़ैमा ने फ़रमाया, हदीस सहीह है। इमाम हाफ़िज़ुश शान इसाबा फ़ी तमीज़ीस सहाबा में फ़रमाते हैं,

صححہ ابن خزیمہ۔

इस हदीस ए जलील को देखिए, अबू तालिब के मरने पर ख़ुद अमीरुल मोमिनीन अली कर्रमाल्लाहु वजह्हुल करीम हुज़ूर ए अक़दस

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ करते हैं कि हुज़ूर का वह गुमराह काफ़िर चचा मर गया। हुज़ूर इस पर इंकार नहीं फ़रमाते न ख़ुद जनाज़े में तशरीफ़ ले जाते हैं।

अबू तालिब की बीबी अमीरुल मोमिनीन की वालिदा माजिदा हज़रत फ़ातिमा बिन्त ए असद रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने जब इंतिक़ाल किया है हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपनी चादर व क़मीस मुबारक में उन्हें कफ़न दिया, अपने दस्त ए मुबारक से लहद खोदी, अपने दस्त ए मुबारक से मिट्टी निकाली फिर उनके दफ़्न से पहले ख़ुद उनकी क़ब्र मुबारक में लेटे और दुआ की,

> الله الذی یحیی و یمیت و هو حی لا یموت اغفر لامی فاطمة بنت اسد و وسع علیها مدخلها بحق نبیك و الانبیاء الذین من قبل فانك ارحم الراحمین رواه الطبرانی فی الکبیر و الاوسط و ابن حبان و الحاکم و صححه و ابو نعیم فی الحلیة عن انس و نحوه ابن ابی شیبة عن جابر و الشیرازی فی الالقاب و ابن عبد البر و ابو نعیم فی المعرفة و الدیلمی بسند حسن عن ابن عباس و ابن عساکر عن علی رضی الله تعالیٰ عنهم اجمعین ۔

काश अबू तालिब मुसलमान होते तो क्या सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उनके जनाज़ा में तशरीफ़ न ले जाते, सिर्फ़ इतने ही इरशाद पर क़नाअत फ़रमाते कि जाओ उसे दबा आओ। अमीरुल मोमिनीन कर्रमाल्लाहु तआला वजह्हुल करीम की

क़ुव्वत ए ईमान देखिए कि ख़ास अपने बाप ने इंतिक़ाल किया है और ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ग़ुस्ल का फ़तवा दे रहे हैं और यह अर्ज़ करते हैं कि या रसूल अल्लाह! वह तो मुशरिक मरा। ईमान इन बंदगान ए ख़ुदा के थे कि अल्लाह व रसूल के मुक़ाबला में बाप बेटे किसी से कुछ अलाक़ा न था, अल्लाह व रसूल के मुख़ालिफ़ों के दुश्मन थे अगरचे वह अपना जिगर हो, दोस्तान ए ख़ुदा व रसूल के दोस्त थे अगरचे उनसे दुन्यावी ज़रर हो।

أُولٰئِكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُم بِرُوْحٍ مِنْهُ وَيُدخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجرِيْ مِنْ تَحتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ اُوْلٰئِكَ حِزْبُ اللهِ اَلَا اِنَّ حِزْبَ اللهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۔ جعلنا الله منهم بهم ولهم بفضل رحمة بهم انه هو الغفور الرحيم والحمد لله رب العٰلمين وصلى الله تعالىٰ عليه سيدنا ومولٰينا محمد واله واصحابه اجمعين اٰمين۔

हदीस - 10 : बुख़ारी व मुस्लिम अपनी सहाह और इब्न ए माजा अपनी सुनन और तहावी शरह ए मआनीयिल आसार और इस्माईली मुस्तख़रज अला सहीहिल बुख़ारी में बतरीक़ ए इमाम अली इब्न ए हुसैन ज़ैनुल आबिदीन अन अम्र इब्न ए उस्मानिल ग़नी रदि अल्लाहु तआला अन्हुम सय्यिदुना उसामा इब्न ए ज़ैद रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रावी,

انه قال یا رسول الله این تنزل فی دارك بمكة فقال و هل ترك عقیل من رباع او دور و كان عقیل ورث ابا طالب هو و طالب و لم یرثه جعفر

و لا علی رضی للہ تعالیٰ عنهما شیئا لانهما کان مسلمین و کان عقیل و
طالب کافرین فکان عمر بن الخطاب رضی للہ تعالیٰ عنه یقول لا یرث
المؤمن الکافر ۔ و لفظ ابن ماجة و الطحاوی فکان عمر من اجل ذلك
یقول الخ و لفظ الاسماعیلی فمن اجل ذلك کان عمر یقول ۔

यानी उन्होंने ख़िदमत ए हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में अर्ज़ की या रसूल अल्लाह! हुज़ूर कल मक्का मुअज़्ज़मा में अपने मुहल्ले के कौन से मकान में नुज़ूल ए इजलाल फ़रमाएंगें। फ़रमाया, क्या हमारे लिए अक़ील ने कोई महल्ला या मकान छोड़ दिया है। इमाम ज़ैनुल आबिदीन ने फ़रमाया, हुआ यह था कि अबू तालिब का तर्का अक़ील और तालिब ने पाया और जाफ़र व अली रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा को कुछ न मिला। यह दोनों हज़रात वक़्त ए मौत ए अबी तालिब मुसलमान थे और तालिब काफ़िर था और अक़ील रदि अल्लाहु तआला अन्हु भी उस वक़्त तक ईमान न लाए थे। इसी बिना पर अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ ए आज़म रदि अल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाया करते कि काफ़िर का तर्का मुसलमान को नही पहुंचता।

تنبیه : لا شك ان قوله و کان عقیل ورث ابا طالب مدرج فی الحدیث و
لم یبین قائله فی الکتب الذی ذکرنا و اخترت انا انه الامام زین
العابدین رضی للہ تعالیٰ عنه و قال الامام العینی فی العمدة قوله و کان
عقیل ادراج من بعض الرواة و لعله من اسامة کذا قال الکرمانی اھ و
الصواب ما ذکرته و قد کتبت علی هامش العمدة ما نصه ۔ اقول : بل

هو من علی بن حسین بن علی رضی للہ تعالیٰ عنهم بیّنه مالك فی مؤطاه فانه اسند اولا عن ابن شهاب بالسند المذکور فی الکتاب اعنی صحیح البخاری ان رسول للہ صلی للہ تعالیٰ علیه وسلم قال لا یرث المسلم الکافر اه ثم قال مالك عن ابن شهاب عن علی بن حسین بن علی بن ابی طالب انه اخبره انما ورث ابا طالب عقیل و طالب و لم یرثه علی قال علی فلذلك ترکنا نصیبنا من الشعب اه و هکذا رواه محمد فی مؤطاه عن مالك مفرقا مصرحا فقد بین و احسن احسن الله الیه و الینا به امین۔

हदीस - 11 : उमर इब्न ए शब्बा किताब ए मक्का में और अबू याला व अबू बशर और समविया अपने फ़वाइद और हाकिम मुस्तदरक में बतरीक़ मुहम्मद इब्न ए सलमा इब्न ए हिशाम इब्न ए हस्सान अन मुहम्मद इब्न ए सीरीन क़िस्सा ए इस्लाम ए अबी क़हाफ़ा वालिद ए अमीरुल मोमिनीन सिद्दीक़ ए अकबर रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा में अनस इब्न ए मालिक रदि अल्लाहु तआला अन्हु से रावी।

قال فلما مد یده یبایعه بکی ابو بکر فقال النبی صلی للہ تعالیٰ علیه وسلم ما یبکیك قال لان تکون ید عمك مکان یده و یسلم و یقر للہ عینك احب الی من ان یکون۔

यानी जब हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपना दस्त ए अनवर अबू क़हाफ़ा से बैअत ए इस्लाम

लेने के लिए बढ़ाया, सिद्दीक़ ए अकबर रदि अल्लाहु तआला अन्हु रोए, हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, क्यों रोते हो। अर्ज़ की, इनके हाथ की जगह आज हुज़ूर के चचा का हाथ होता और उनके इस्लाम लाने से अल्लाह तआला हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की आँख ठंडी करता तो मुझे अपने बाप के मुसलमान होने से ज़्यादा यह बात अज़ीज़ थी।

हाकिम ने कहा, यह हदीस बशर्ते शेख़ैन सहीह है। हाफ़िज़ुश शान ने इसाबा मे इसे मुसल्लम रखा और फ़रमाया, सनदुहु सहीह।

हदीस - 12 : अबू क़ुर्रा मूसा इब्न ए तारिक़ वह मूसा इब्न ए उबैदा वह अब्दुल्लाह इब्न ए दीनार वह अब्दुल्लाह इब्न ए उमर रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रावी,

قال جاء ابو بکر بابی قحافة یقوده یوم فتح مکة فقال رسول للہ صلی للہ تعالیٰ علیه وسلم الا ترکت الشیخ حتی نأتیه قال ابو بکر اردت ان یأجره للہ و الذی بعثك بالحق لانا کنت اشد فرحا باسلام ابی طالب لو کان اسلم منی بابی۔

अल्लाह अल्लाह यह महबूब में फ़ना ए मुतलक़ का मर्तबा है,

صدق للہ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ۔

इसी तरह अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़ ए आज़म रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हु अम्मे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से कहा,

انا باسلامك اذا اسلمت افرح منی باسلام الخطاب ذکر ابن اسحق فی سیرته۔

हदीस - 13 :

یونس بن بکیر فی زیادات مغازی ابن اسحق عن یونس بن عمرو عن ابی السفر قال بعث ابو طالب الی النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فقال اطعمنی من عنب جنتك فقال ابو بکر ان اللہ حرمها علی الکافرین۔

यानी अबू तालिब ने हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ कर भेजी कि मुझे अपनी जन्नत के अंगूर खिलाइए। इस पर सिद्दीक़ ए अकबर रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, बेशक अल्लाह ने उन्हें काफ़िरों पर हराम किया है।

हदीस - 14 :

الواحدی من حدیث موسی بن عبیدۃ قال اخبرنا محمد بن کعب القرظی قال بلغنی انه لما اشتکی ابو طالب شکواہ التی قبض فیها قالت له قریش ارسل الی ابن اخیك یرسل الیك من هذہ الجنة التی ذکرها یکون لك شفاء فارسل الیه فقال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ان اللہ حرمها علی الکافرین طعامها و شرابها ثم اتاہ فعرض علیه الاسلام۔ فقال لو لا ان تعیر بها فیقال جزع عمك من الموت لاقررت بها عینك و استغفر له بعد ما مات فقال المسلمون ما یمنعنا ان نستغفر لآبائنا و لذوی قرابتنا قد استغفر ابراہیم علیه السلام

لابیه و محمد صلی للہ تعالیٰ علیه وسلم لعمه فاستغفروا للمشرکین
حتی نزلت مَاکَانَ لِلنَّبِیِ وَالَّذِیۡنَ آمَنُوۡا الاٰیة ۔

यानी अबू तालिब के मर्जुल मौत में काफ़िरान ए क़ुरैश ने सलाह दी कि अपने भतीजे (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से अर्ज़ करो कि यह जन्नत जो बयान करते हैं उसमें से तुम्हारे लिए कुछ भेज दें कि तुम शिफ़ा पाओ। अबू तालिब ने अर्ज़ कर भेजी। हुज़ूर ए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया कि अल्लाह तआला ने जन्नत का खाना पानी काफ़िरों पर हराम किया है। फिर तशरीफ़ लाकर अबू तालिब पर इस्लाम पेश किया। अबू तालिब ने कहा, लोग हुज़ूर पर तान करेंगे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का चचा मौत से घबरा गया, इसका ख़्याल न होता तो मैं हुज़ूर की ख़ुशी कर देता। जब वह मर गए हुज़ूर ए अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उनके लिए दुआ ए मग़फ़िरत की। मुसलमानों ने कहा, हमें अपने वालिदों क़रीबों से दुआ ए मग़फ़िरत से कौन मानेअ है। इब्राहीम अलैहिस सलात वस्सलाम ने अपने बाप के लिए इस्तग़फ़ार की, मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपने चचा के लिए इस्तग़फ़ार कर रहे हैं, यह समझकर मुसलमानों ने अपने अक़ारिब मुशरिकीन के वास्ते दुआ ए मग़फ़िरत की। अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने आयत उतारी कि मुशरिकों के लिए यह दुआ न नबी को रवा न मुसलमान को जबकि रौशन हो लिया कि वह जहन्नमी हैं।

वलइआज़ु बिल्लाहि तआला।

हदीस - 15 : अबू नईम हिलया में अमीरुल मोमिनीन मौला अली कर्रमाल्लाहु तआला वजह्हुल करीम से रावी, रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

كانت مشية لله عز و جل فى اسلام عى العباس و مشيتى فى اسلام عى ابى طالب فغلبت مشية لله مشيتى۔

अल्लाह तआला ने मेरे चचा अब्बास का मुसलमान होना चाहा और मेरी ख़्वाहिश यह थी कि मेरा चचा अबू तालिब मुसलमान हो, अल्लाह तआला का इरादा मेरी ख़्वाहिश पर ग़ालिब आया कि अबू तालिब काफ़िर रहा और अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हु मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए।

فالله الحجة البالغة۔

फ़सल ए सुवम (3)

54 अक़वाल अइम्मा ए किराम व उलमा ए आलाम ऊपर गुज़रे और बाद ए कलाम ए ख़ुदा व रसूल जल्ला जलालुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम क्या हालत ए मुंतज़िरा बाक़ी है, ख़ातिमा का हाल ख़ुदा व रसूल से ज़्यादा कौन जाने अज़्ज़ा मजदुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मगर तकसीर ए फ़वाइद व तस्कीन ए ज़ाइद के लिए बाज़ और भी कि सर ए दस्त पेश ए नज़र हैं इज़ाफ़ा किजिए कि ज़ियादत ए ख़ैर ज़ियादत ए ख़ैर है। व बिल्लाहित तौफ़ीक़।

इमामुल अइम्मा, मालिकुल अज़िमा, काशिफ़ुल ग़ुम्मा, सिराजुल अइम्मा, सय्यिदुना इमाम ए आज़म रदि अल्लाहु तआला अन्हु फ़िक़्ह ए अकबर में फ़रमाते हैं,

ابو طالب عمه صلی للہ تعالیٰ علیه وسلم مات کافرا۔

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के चचा अबू तालिब की मौत कुफ्र पर हुई। वलइआज़ु बिल्लाह।

इमाम बुरहानुददीन अली इब्न ए अबी बक्र फ़रग़ानी हिदाया में फ़रमाते हैं,

اذا مات الکافر و له ولی مسلم فانه یغسله و یکفنه و یدفنه بذلك امر علی رضی للہ تعالیٰ عنه فی حق ابیه ابی طالب لکن یغسل غسل الثوب النجس و یلف فی خرقة و یحفر حفیرة من غیر مراعاة سنة التکفین و اللحد و لا یوضع فیه بل یلقی۔امام ابو البرکات عبد اللہ نسفی کافی شرح وافی میں فرماتے ہیں، مات کافر یغسله ولیه المسلم و یکفنه و یدفنه و الاصل فیه انه لما مات ابو طالب اتی علی رضی للہ تعالیٰ عنه رسول للہ صلی للہ تعالیٰ علیه وسلم و قال ان عمك الشیخ الضال قد مات فقال اغسله و اکفنه و ادفنه و لا تحدث حدثا حتی تلقانی ای لا تصل علیه۔

अल्लामा इब्राहीम हल्बी ग़ुनिया शरह मुनिया में फ़रमाते हैं,

مات للمسلم قريب كافر ليس له ولى من الكفار يغسله غسل الثوب النجس و يلفه فى خرقة و يحفر له حفرة و يلقيه فيها من غير مراعاة السنة فى ذلك لما روى ان ابا طالب لما هلك جاء على فقال يا رسول الله ان عمك الضال قد مات الخ۔

अल्लामा इब्राहीम तराबुलुसी बुरहान शरह मुवाहिबुर रहमान फिर अल्लामा सय्यिद अहमद तहतावी हाशिया मिराक़ीइल फ़लाह में ज़ेर ए क़ौल नूरुल ईज़ाह,

ان كان للكافر قريب مسلم غسله۔

फ़रमाते हैं,

الاصل فيه ما رواه ابو داؤد وغيره عن على رضى الله تعالىٰ عنه قال لما مات ابو طالب الحديث۔

अल्लामा ज़ैन इब्न ए नुजैम मिस्री बैहरुर राइक़ में फ़रमाते हैं,

يغسل ولى مسلم الكافر و يكفنه و يدفنه بذلك امر على رضى الله تعالىٰ عنه ان يفعل بابيه حين مات۔

इन सब इबारात का हासिल यह है कि मुसलमान अपने क़राबत दार काफ़िर मुर्दा को नहला सकता है कि मौला अली कर्रम अल्लाहु तआला वजहहु ने अपने बाप अबू तालिब को नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की इजाज़त से नहलाया।

फ़तहुल क़दीर व किफ़ाया व निहाया वग़ैरह तमाम शुरुह ए हिदाया में इस मज़मून को मक़बूल व मुक़र्रर रखा। कुतुब ए फ़िक़्ह में इसकी इबारत ब कसरत मिलेंगी सबकी नक़्ल से अतालत की हाजत नहीं। वाज़ेह हुआ कि सब उलमा ए किराम अबू तालिब को काफ़िर जानते हैं यूँ ही इमाम दाऊद ने अपनी सुनन में,

باب الرجل يموت له قرابة مشرك۔

वज़अ फ़रमाया यानी "बाब उस शख़्स का जिसका कोई क़राबत दार मुशरिक मरे" और इमाम नसाई ने,

باب مواراة المشرك۔

यानी "दफ़्न ए मुशरिक का बाब" और दोनों ने इसमें यही हदीस ए अबू तालिब ज़िक्र की। इन्हीं नसाई के इसी मुजतबा में एक बाब,

النهى عن الاستغفار للمشركين۔

है उसमें हदीस ए दुवम रिवायत की, इब्न ए माजा ने सुनन में बाब ए मिरास,

اهل الاسلام من اهل الشرك۔

लिखा यानी मुशरिक का तरका मुस्लिम को मिलेगा या नहीं उसमें हदीस ए दुवम वारिद की। इमाम अजल्ल साहिबुल मज़हब सय्यिदुना इमाम मालिक मुअत्ता शरीफ में बाब التوارث بين اهل الملل मुनअक़िद फ़रमाया यानी मुख़्तलिफ़ दीन वालों में एक को दूसरे का तरका मिलने का हुक्म और उसमें हदीसें मुस्लिम व काफ़िर के अदम ए तवारुस की रिवायत फ़रमाईं जिनमें यह हदीस ए इमाम ज़ैनुल

आबिदीन दर बारा ए तरका ए अबू तालिब मज़कूर हदीस ए दहुम भी इरशाद की यूँ ही इमाम मुहररिरुल मज़हब सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ने मुअत्ता शरीफ़ में बाब

لا یرث المسلم الکافر۔

मुनअक़िद फ़रमाकर हदीस ए मज़कूर ईराद की। इमाम अजल्ल मुहम्मद इब्न ए इस्माइल बुख़ारी ने जामेअ सहीह किताबुल जनाइज़ में एक बाब वज़अ फ़रमाया,

باب اذا قال المشرك عند الموت لا اله الا اللّٰه۔

यानी बाब इसके बयान का कि मुशरिक मरते वक़्त ला इलाहा इल्लल्लाह कहे तो क्या हुक्म है और उसमें हदीस ए दुवम रिवायत फ़रमाइ, उसी की किताबुल अदब में लिखा,

باب کنیۃ المشرك۔

उसमें हदीस ए चहारुम रिवायत की और हदीस ए मज़कूर,

سمعت النبی صلی اللّٰہ تعالیٰ علیه وسلم یقول و ھو علی المنبر ان بنی ھاشم بن المغیرۃ استاذنونی ان ینکحوا ابنتھم علی بن ابی طالب۔

ज़िक्र की। इमाम क़सतलानी ने ततबीक़ ए हदीस व तरजिमा में लिखा,

فذکر اباطالب المشرك بکنیة۔

नबी ए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अबू तालिब मुशरिक को कुन्नियत से याद फ़रमाया। फिर लिखा,

قد جوزوا ذکر الکافر بکنیته اذا کان لا یعرف الا بھا کما فی ابی طالب او کان علی سبیل التالف رجاء اسلامھم او تحصیل منفعة منھم لا علی سبیل التکریم فانا مامورون بالاغلاظ علیھم۔

उलमा ने काफ़िर को कुन्नियत से ज़िक्र करना नाजाइज़ रखा जबकि वह और नाम से न पहचाना जाए जैसे अबू तालिब या ब उम्मीद ए इस्लाम तालीफ़ मक़सूद या काम निकालना हो मगर बतौर ए तकरीम जाइज़ नहीं कि हमें उन पर सख़्ती करने का हुक्म है।

उमदतुल क़ारी में है,

قال ابن بطال فیه جواز تکنیة المشرك۔

इमाम इब्न ए बत्ताल ने फ़रमाया, इस हदीस से मुशरिक को ब लफ़्ज ए कुन्नियत याद करने का जवाज़ मालूम हुआ। उसी में है,

فیه دلالة ان للہ تعالیٰ قد یعطی الکافر عوضا من اعماله التی مثلھا یکون قربة لاھل الایمان باللہ تعالیٰ لانه صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم اخبر ان عمه نفعته تربیته ایاہ و حیاطته له التخفیف الخ۔

इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल काफ़िर को भी उसके आमाल का कुछ एवज़ देता है जो अहले ईमान करें तो क़ुर्बे इलाही पाएं। देखों नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी कि हुज़ूर के चचा को हुज़ूर की ख़िदमत व हिमायत ने तख़्फ़ीफ़ ए अज़ाब का फ़ायदा दिया। इमाम आरिफ़

बिल्लाह सय्यिदी अली मुत्तक़ी मक्की क़ुद्दसा सिर्रुहूल मलकी ने अपनी कुतब ए जलीला मनहजुल उम्माल व कंज़ुल उम्माल व मुंतख़ब कंज़ुल उम्माल में एक बाब मुन्अक़िद फ़रमाया,

الباب السادس فی اشخاص لیسوا من الصحابة۔

उन शख़्सों के बारे में जो सहाबी नहीं। और इस बाब में अबू तालिब व अबू जहल वग़ैरहुमा ज़िक्र किया। इसी तरह अल्लामा अब्दुर रहमान इब्न ए शैबा ने तैसीरुल वुसूल इला जामिइल उसूल में अहादीस ए ज़िक्र ए अबी तालिब को फ़सल ए ग़ैर सहाबा में वारिद किया और उसमें सिर्फ़ हदीस दुवम व चहारुम व पंजुम को जलवा दिया। अगर अबू तालिब को इस्लाम नसीब होता तो क्या वह शख़्स सहाबा से ख़ारिज हो सकता जिसने बचपन से हुज़ूर पुरनूर सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को गोद में पाला और मरते दम तक हज़र व सफ़र की हमरकाबी से बहरायाबी का ग़ुलग़ुला डाला।

यूँ ही इमाम हाफ़िज़ुल हदीस अबुल फ़ज़्ल शहाबुद्दीन इब्न ए हजर असक़लानी ने किताब इसाबा फ़ी तमीज़िस सहाबा में अबू तालिब को बाब

الکنی حرف الطاء المهمله۔

की क़िस्म ए राबे में ज़िक्र किया यानी वह लोग जिन्हें सहाबी कहना मरदूद व ग़लत व बातिल है। उसी में फ़रमाते हैं,

ورد من عدة طرق فی حق من مات فی الفترة و من ولد مجنونا و نحو
ذلك ان كلا منهم يدلی بحجة و يقول لو عقلت او ذكرت لآمنت فترفع

لھم نار و یقال لھم ادخلوھا فمن دخلھا کانت علیھم بردا و سلاما و من امتنع ادخلھا کرھا و نحن نرجو ان یدخل عبد المطلب و ال بیتہ فی جملۃ من یدخلھا طائعا فی نجو لکن ورد فی ابی طالب ما یدفع ذلك و ھو ما تقدم من ایۃ براءۃ و ما فی الصحیح انہ فی ضحضاح من النار، فھٰذا شان من مات علی الکفر فلو کان مات علی التوحید لنجا من النار اصلا و الاحادیث الصحیحۃ و الاخبار المتکاثرۃ طافحۃ بذلك اھ مختصراً۔

यानी बहुत असानीद से हदीस आई कि जो ज़माना ए फ़ितरत में इस्लाम लाने से पहले मर गया या मजनून पैदा हुआ और जुनून ही में गुज़र गया और इसी क़िस्म के लोग जिन्हें दावत ए अम्बिया अलैहिमुस सलातो वस्सना न पहुंची उनमें हर एक रोज़ ए क़यामत एक उज़्र पेश करेगा कि इलाही मैं अक़्ल रखता या मुझे दावत पहुंचती तो मैं ईमान लाता, उनके इम्तिहान को एक आग बलंद की जाएगी और इरशाद होगा इसमें जाओ, जो हुक्म मानेगा और उसमें दाख़िल होगा वह उस पर ठंडी और सलामती हो जाएगी और जो न मानेगा वह जबरन आग में डाला जाएगा और हमें उम्मीद है कि अब्दुल मुत्तलिब और उनके घरवाले कि क़ब्ल ज़ुहूर ए नूर ए इस्लाम इंतिक़ाल कर गए वह सब उन्हीं लोगों में होंगे जो अपनी ख़ुशी से उस इम्तिहानी आग में जाकर नाजी हो जाएंगे मगर अबू तालिब के हक़ में वह वारिद हुआ है जो इसे दफ़्अ करता है, सूरह ए तौबा की आयत और हदीस ए सहीह का इरशाद कि वह पाँव तक की आग में है, यह हाल उसका है जो

काफ़िर मरे, अगर अख़ीर वक़्त इस्लाम लाकर मरना होता तो दोज़ख़ से नजात ए कुल्ली चाहिए थी सहीह व कसीर हदीसें कुफ्र ए अबी तालिब साबित कर रही हैं।

फिर फ़रमाया,

و قد فخر المنصور علی محمد بن عبد للہ بن الحسن لما خرج بالمدینۃ و کاتبہ المکاتبات المشھورۃ و منھا فی کتاب المنصور و قد بعث النبی صلی للہ تعالیٰ علیہ وسلم و لہ اربعۃ اعمام فامن بہ اثنان احدھما ابی و کفر بہ اثنان احدھما ابوك۔

यानी जब इमाम नफ़्स ज़कीया मुहम्मद इब्न ए अब्दुल्लाह इब्न ए हसन मुज्तबा रदि अल्लाहु तआला अन्हुम ने ख़लीफ़ा ए अब्बासी अब्दुल्लाह इब्न ए मुहम्मद इब्न ए अली इब्न ए अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा मशहूर ब मंसूर व अनीक़ी पर ख़ुरूज फ़रमाया और मदीना तय्यबा पर तसल्लुत करके ख़लीफ़ा व अमीरुल मोमीनीन लक़ब पाया, उनमें और ख़लीफ़ा ए मज़कूर मंसूर में मुकातबात ए मशहूरा हुए अज़ाँ जुमला मंसूर ने एक नामा में लिखा जब हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नबूवत ज़ाहिर हुई, हुज़ूर के चार चचा ज़िंदा थे हमज़ा व अब्बास व अबू तालिब व अबू लहब, दो हुज़ूर पर ईमान लाए, एक उनमें मेरे बाप हैं यानी हज़रत अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हु और दो काफ़िर रहे, एक उनमें आपके बाप हैं यानी अबू तालिब। यह मंसूर अलावा ख़लीफ़ा व अहले बैत होने के ख़ुद भी उलमा ए तबअ ताबिईन व फ़ुक़हा मुहद्दिसीन से हैं। इमाम जलालउद्दीन सुयूती अलैहिर रहमा ने तारिख़ुल

ख़ुलफ़ा में उन्हें फ़क़ीहुन नफ़्स व जय्यिदुल मुशारिका फ़िल इल्म लिखा और फ़रमाया,

ولد سنة خمس و تسعين و ادرك جده و لم يرو عنه و روى عن ابيه و عن عطاء بن يسار و عنه ولده المهدى ـ

और इमाम अजल्ल नफ़्स ज़कीया को यूँ बे ताम्मुल लिख भेजना और इमाम का उस पर रद न फ़रमाना भी बता रहा है कि कुफ़्र ए अबी तालिब वाज़ेह व मशहूर बात थी। इसाबा में उसके बाद फ़रमाया,

و من شعر عبد الله بن المعتز يخاطب الفاطمين ء انتم بنو بنته دوننا ــ و نحن بنو عمه المسلم ـ

यानी अब्दुल्लाह इब्न ए मुहम्मद इब्न ए जाफ़र इब्न ए मुहम्मद इब्न ए हारून इब्न ए मुहम्मद इब्न ए अब्दुल्लाह इब्न ए मुहम्मद इब्न ए अली इब्न ए अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा या यूँ कहिए कि कुछ ख़ुलफ़ा के बेटे अब्दुल्लाह इब्न ए मु'तिज़ बिल्लाह इब्नुल मुतावक्किल इब्नुल मु'तसिम इबनुर रशीद इब्नुल महदी इब्नुल मंसूर का एक शे'र बाज़ सादात ए किराम के ख़िताब में है कि "तुम हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नवासे हो हम नहीं और हम हुज़ूर के मुसलमान चचा के बेटे हैं", इसमें भी कुफ़्र ए अबी तालिब की साफ़ ता`रीज़ मौजूद है। अब्दुल्लाह अहले इल्म व फ़ज़्ल से हैं, हदीस में अली इब्न ए हरब मुआसिर ए इमाम बुख़ारी व मुस्लिम के शागिर्द नीज़ इमाम ममदूह किताबुल अहकाम फिर इमाम क़स्तलानी मुवाहिब में फ़रमाते हैं,

نحن نرجو ان یدخل عبد المطلب و ال بیته الجنة الا ابا طالب فانه ادرك البعثة و لم یؤمن اه باختصار۔

हम उम्मीद करते हैं कि अब्दुल मुत्तलिब और उनके अहले बैत सब जन्नत में जाएंगे सिवा अबू तालिब के कि ज़माना ए इस्लाम पाया और ईमान न लाए।

नीज़ फ़तहुल बारी शरह सहीह बुख़ारी में फ़रमाते हैं,

من عجائب الاتفاق ان الذین ادرکھم الاسلام من اعمام النبی صلی ﷲ تعالیٰ علیه وسلم اربعة لم یسلم منھم اثنان و اسلم اثنان و کان اسم من لم یسلم ینافی اسامی المسلمین و ھما ابو طالب و اسمه عبد مناف و ابو لھب و اسمه عبد العزی بخلاف من اسلم و ھما حمزة و العباس۔

अजाइब ए इत्तिफ़ाक़ से है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के चार चचा ज़माना ए इस्लाम में ज़िंदा थे, दो इस्लाम न लाए और दो मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए, वह दो कि इस्लाम न लाए उनके नाम भी पहले ही से मुसलमानों के नाम के ख़िलाफ़ थे, अबू तालिब का नाम अब्द ए मनाफ़ था और अबू लहब का अब्दुल उज़्ज़ा और दो कि मुसलमान हुए उनके नाम पाक व साफ़ थे, हमज़ा व अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा।

و کذا اثره الزرقانی فی شرح المواہب۔

इमाम अहमद इब्न ए मुहम्मद ख़तीब क़स्तलानी मवाहिबुल लदुन्निया व मिनह ए मुहम्मदिया में फ़रमाते हैं,

كان العباس اصغر اعمامه صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم و لم یسلم منهم الا هو و حمزة۔

अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हु सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सबमें छोटे चचा थे, हुज़ूर के आमाम में सिर्फ़ यह और हज़रत ए हमज़ा मुसलमान हुए। इमाम मुहम्मद मुहम्मद मुहम्मद इब्न ए अमीरुल हाज शरह ए मुनिया अवाख़िर ए सलात इस मसअला के बयान में कि काफ़िर के लिए दुआ ए मग़फ़िरत नाजाइज़ है, आयत ए दुवम तिलावत करके फ़रमाते हैं,

ثبت فی الصحیحین ان سبب نزول الایة قوله صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم ابی طالب لاستغفرن لك ما لم انه عنك۔

सहीहैन में साबित हो चुका है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अबू तालिब के लिए दुआ ए मग़फ़िरत की थी (यानी यह कहा था कि जब तक मुझे मना न किया गया मैं तेरे लिए इस्तग़फ़ार करुंगा) इस पर यह आयत उतरी। इमाम मुहीउस सुन्नाह बग़वी मआलिम शरीफ़ अव्वल रुकू सूरह ए बक़रह में ज़ेर ए क़ौलिहि तआला

اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَیْهِمْ۔

फिर क़ाज़ी हुसैन इब्न ए मुहम्मद दयार बक्री मालिकी मक्की फ़रमाते हैं, कुफ़्फ़ार चार क़िस्म है, कुफ़्र ए इंकार व कुफ़्र ए हुजूद व

कुफ़्र ए इनाद व कुफ़्र ए निफ़ाक़, कुफ़्र ए इंकार यह कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल को न दिल से जाने और न ज़बान से माने जैसे इबलीस व यहूद और कुफ़्र ए निफ़ाक़ यह कि ज़बान से माने मगर दिल में न जाने।

و کفر العناد ان یعرف اللہ بقلبه و یعترف بلسانه و لا یدین به ککفر ابی طالب حیث یقول و لقد علمت بان دین محمد ۔ من خیر ادیان البریة دینا ۔ لو لا الملامة او حذار مسبة ۔ لو جدتنی سمحا بذاك مبینا ۔

यानी कुफ़्र ए इनादिया कि अल्लाह तआला को दिल से भी जाने और ज़बान से भी कहे मगर तस्लीम व गिरवीदगी से बाज़ रहे जैसे अबू तालिब का कुफ़्र कि यह शे'र कहे, वल्लाह मैं जानता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का दीन तमाम जहान के दीन से बेहतर है, अगर मलामत या ता'ना से बचना न होता तो तू मुझे देखता कि मैं कैसी अहले दिली के साथ साफ़ साफ़ इस दीन को क़बूल कर लेता। इमाम ममदूह यह चारों क़िस्में बयान करके फ़रमाते हैं।

جمیع هذه الاصناف سواء فی ان من لقی اللہ تعالیٰ بواحد منها لا یغفر له ۔

यह सब क़िस्में इस हुक्म में यकसाँ हैं कि जो इनमें से किसी क़िस्म का कुफ़्र करके अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से मिलेगा वह कभी उसे न बख़्शेगा।

इमाम शहाबुद्दीन अबुल अब्बास अहमद इब्न ए इदरीस क़र्राफ़ी ने शरह तनक़ीह फिर इमाम क़सतलानी ने मुवाहिब में कुफ़्फ़ार की एक क़िस्म यूँ बयान फ़रमाइ,

من اٰمن بظاہرہ و باطنہ و کفر بعدم الاذعان للفروع کما حکی عن ابی طالب انہ کان یقول انی لاعلم ان ما یقولہ ابن اخی لحق و لو لا انی اخاف ان تعیرنی نساء قریش لاتبعتہ و فی شعرہ یقول عـ لقد علموا ان ابـننا لا مکذب یقیناً و لا یعزی لقول الاباطل فھذا تـصریح باللسان و اعتقاد بالجنان غیر انہ لم یذعن۔

यानी एक काफ़िर वह है जो क़ल्ब से आरिफ़, ज़बान से मो'तरिफ़ मगर इज़आन न लाए जैसे अबू तालिब से मर्वी है कि बेशक मैं यक़ीनन जानता हूँ कि जो कुछ मेरे भतीजे (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं ज़रूर हक़ है अगर इसका अंदेशा न होता कि क़ुरैश की औरतें मुझे ऐब लगाएंगी तो ज़रूर मैं उनका ताबे हो जाता और अपने एक शे'र में कहा, ख़ुदा की क़सम काफ़िरान ए क़ुरैश ख़ूब जानते हैं कि हमारे बेटे (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) यक़ीनन सच्चे हैं और मआज़ अल्लाह कोई कलमा ख़िलाफ़ ए हक़ कहना उनकी तरफ़ निस्बत नहीं किया जाता। तो यह ज़बान से तसरीह और दिल से एतिक़ाद सब कुछ है मगर इज़आन न हुआ। इमाम इब्न ए असीर जज़री निहाया फिर अल्लामा ज़रक़ानी शरह ए मुवाहिब में फ़रमाते हैं,

> كفر عناد هو ان يعرفه بقلبه و يعترف بلسانه و لا يدين به كابى طالب
> ۔

कुफ़्र ए इनादिया है कि दिल से पहचाने और ज़बान से इक़रार करे मगर तस्लीम व इंक़ियाद से बाज़ रहे जैसे अबू तालिब। अल्लामा मज्दउद्दीन फ़िरोज़ाबादी सफ़रुस सआदत में फ़रमाते हैं,

> چوں عم نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ابو طالب بیمار شد باوجود آنکہ مشرک بود او را عیادت فرمود و دعوت اسلام کرد ابو طالب قبول نہ کرد اھ ملخصاً۔

शेख़ ए मुहक़्क़िक़ मदारिजुन नबूवत में फ़रमाते हैं,

حدیث صحیح اثبات کردہ است برائے ابو طالب کفر را۔

फिर बाद ज़िक्र ए अहादीस फ़रमाया,

ودر روضۃ الاحباب نیز اخبار موت ابو طالب بر کفر آوردہ الخ۔

बहरुल उलूम मलिकुल उलमा मौलाना अब्दुल अली फ़वातिहुर रहमूत शरह ए मुसल्लमुस सुबूत में फ़रमाते हैं,

> احادیث کفرہ شهيرة و قد نزل فى حق رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم فى شان عمه ابى طالب اِنَّكَ لَا تَهْدِیْ مَنْ اَحْبَبْتَ كما فى صحيح مسلم و سنن الترمذى و قد ثبت فى الخبر الصحيح عن الامام محمد بن الباقر كرم الله تعالىٰ وجهه الكريم و وجوه اٰبائه الكرام ان رسول

الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم ورث طالبا و عقيلا اباهما و لم يورث عليا و جعفرا قال على و لذا تركنا نصيبنا فى الشعب كذا فى مؤطا الامام مالك ۔

यानी कुफ़्र ए अबू तालिब की हदीसें मशहूर हैं फिर उसके सुबूत में आयत ए ऊला का उतरना और हदीस दहुम कुफ़्र ए अबू तालिब की वजह से नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का अली व जाफ़र को तरका न दिलाना बयान फ़रमाया।

اقول و ذكر الامام الباقر رضى الله تعالىٰ عنه وقع زلة من القلم و انما هو الامام زين العابدين رضى الله تعالىٰ عنه كما اسمعناك من المؤطا و الصحيحين وغيرها ۔

नसीमुर रियाज़ शरह ए शिफ़ा ए इमाम क़ाज़ी अयाज़ फ़स्लुल वजहिल ख़ामिस मिन वुजूहिस सब इमाम इब्न ए हजर मक्की से नक़ल फ़रमाया,

حديث مسلم ان ابى و اباك فى النار اراد بابيه عمه ابا طالب لان العرب تسمى العم ابا (ملخصاً) ۔

यानी अरब की आदत है कि बाप को चचा कहते हैं, हुज़ूर सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने भी इसी आदत पर इस हदीस में अपने चचा अबू तालिब को बाप कहकर फ़रमाया कि वह दोज़ख़ में है। इमाम ख़ातिमुल हुफ़्फ़ाज़ जलालुल मिल्लत वद दीन सुयूती मसालिकुल हुनफ़ा फ़ी वालिदिल मुस्तफ़ा

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में इसी हदीस की निस्बत फ़रमाते हैं,

ما المانع ان یکون المراد به عمه ابو طالب فکانت تسمیة ابی طالب ابا النبی صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم شائعة عندھم لکونه عمه و کونه رباه و کفله من صغرہ اھ ملخصاً۔

कौन मानिअ है कि इस हदीस में अबू तालिब मुराद हो कि वह दोज़ख़ में है, उस ज़माना में शाए था कि अबू तालिब को हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का बाप कहा जाता, चचा होने और बचपन से हुज़ूर ए अक़दस की खिदमत व किफ़ालत करने की बाइस।

अक़ूल : जिस तरह अभी अबू तालिब के शे'र से गुज़रा कि हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अबू तालिब की बीबी हज़रत फ़ातिमा बिन्त ए असद रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा को अपनी माँ फ़रमाया। उसी में फ़रमाते हैं,

اخرج تمام الرازی فی فوائدہ بسند ضعیف عن ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنهما قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم اذا کان یوم القیٰمة شفعت لابی و امی و ابی طالب و اخ لی کان فی الجاهلیة اوردہ المحب الطبری و ھو من الحفاظ و الفقهاء فی کتابه ذخائر العقبی فی مناقب ذوی القربی و قال ان ثبت فهو مؤول فی ابی طالب علی ما ورد فی الصحیح من تخفیف العذاب عنه بشفاعته صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم

انتھی و انما احتاج الی تاویلہ فی ابی طالب دون الثالثۃ ابیہ و امہ و اخیہ یعنی من الرضاعۃ لان ابا طالب ادرک البعثۃ و لم یسلم و الثلاثۃ ماتوا فی الفترۃ۔

यानी तमामुर राज़ी ने ब सनद ए ज़ईफ़ इब्न ए उमर रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत किया कि हुज़ूर ए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मैं रोज़ ए क़यामत अपने वालिदैन और अबू तालिब और अपने एक रज़ाई भाई की कि ज़माना ए जाहिलियत में गुज़रा, शफ़ाअत फ़रमाऊंगा। इमाम मुहिब तबरी ने कि हाफ़िज़ान ए हदीस व उलमा ए फ़िक्ह से हैं ज़ख़ाइरुल उक़बा में फ़रमाया यह हदीस अगर साबित भी हो तो अबू तालिब के बारे में इसकी तावील वह है सहीह हदीस में आया कि हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत से अज़ाब हल्का हो जाएगा। इमाम सुयूती अलैहिर रहमा फ़रमाते हैं, ख़ास अबू तालिब के बाब में तावील की हाजत यह हुई कि अबू तालिब ने ज़माना ए इस्लाम पाया और कुफ़्र पर इसरार रखा ब ख़िलाफ़ ए वालिदैन करीमैन व बिरादर ए रज़ाई कि ज़माना ए फ़ितरत में गुज़रे। यानी एक हदीस ए ज़ईफ़ में आया कि मैं रोज़ क़यामत अपने वालिदैन और अबू तालिब और अपने एक रज़ाई भाई कि ज़माना ए जाहिलियत में गुज़रा, शफ़ाअत फ़रमाऊंगा।

अक़ूल : यहाँ तावील ब माना बयान मुराद व माना है जिस तरह शरह ए मआनी ए क़ुरआन को तावील कहते हैं, कुफ़्फ़ार से तख़्फ़ीफ़ ए अज़ाब भी हुज़ूर सय्यिदुश शाफ़िईन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अक़साम ए शफ़ाअत से है। शफ़ाअत ए कुबरा कि फ़तह

ए बाब ए हिसाब के लिए है तमाम जहान को शामिल व आम है। इमाम नववी ने ब आंके अबू तालिब को बिलयक़ीन काफ़िर जानते हैं तबवीब ए सहीह मुस्लिम शरीफ़ में हदीस चहारुम व पंजुम का बाब यूँ लिखा,

باب شفاعة النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لابی طالب و التخفیف عنہ بسببہ۔

नबी ए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अबू तालिब के लिए शफ़ाअत और उसके अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ का बाब। इमाम बदरुद्दीन ज़रकशी ने ख़ादिम में इब्न ए दहिया से नक़ल किया कि हुज़ूर सलल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अक़साम ए शफ़ाअत से वह तख़्फ़ीफ़ ए अज़ाब है जो अबू लहब को बरोज़ ए दो शम्बा मिलता है,

لسرورہ بولادۃ النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم و اعتاقہ ثویبۃ حین بشر بہ قال و انما ھی کرامۃ لہ صلی للہ تعالیٰ علیہ وسلم۔

इसलिए कि उसने हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मीलाद मुबारक की ख़ुशी की और उसका मुज़्दा सुनकर सुएबा को आज़ाद किया था। यह हुज़ूर ही का फ़ज़्ल है जिसके बाइस उसने तख़्फ़ीफ़ पाई, सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम,

نقلہ فی المسالك ایضاً۔

नीज़ मसालिकुल हुनफ़ा फिर शरह ए मुवाहिब अल्लामा ज़रक़ानी में है,

قد ثبت فی الصحیح و اخبر الصادق المصدوق صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم ان ابا طالب اهون اهل النار عذاب اهملتقطا۔

बेशक सहाह में साबित है और सादिक़ व मसदूक़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी कि अबू तालिब पर सब दोज़ख़ीयों से कम अज़ाब है।

اللهم اجرنا من عذابك الاليم بجاه نبيك الرؤف الرحيم عليه و على اله افضل الصلوة و ادوم التسليم امين و الحمد لله رب العٰلمين۔

फ़सल ए चहारुम (4)

अल्लामा अब्दुर रऊफ़ मुनावी तैसीर फिर अल्लामा अली इब्न ए अहमद अज़ीज़ी सिराजुल मुनीर शरह ए जामेअ सग़ीर मे ज़ेर ए हदीस ए हश्तुम फ़रमाते हैं,

هذا يؤذن بموته على كفره و هو الحق و وهم البعض۔

यानी यह हदीस बताती है कि अबू तालिब की मौत कुफ़्र पर हुई और यही हक़ है और इसका ख़िलाफ़ वहम है। इमाम ऐनी ज़ेर ए हदीस ए दुवम व चहारुम फ़रमाते हैं,

هذا كله ظاهر انه مات على غير الاسلام فان قلت ذكر السهيلى انه راى فى بعض كتب المسعودى انه اسلم قلت مثل هذا لا يعارض ما فى الصحيح۔

इन सब हदीसों से ज़ाहिर है कि अबू तालिब की मौत ग़ैर इस्लामी पर हुई अगर तू कहे कि सुहेली नी ज़िक्र किया कि उन्होंने मसऊदी की किसी किताब में देखा कि अबू तालिब इस्लाम ले आए, मैं कहूंगा ऐसी बे सरोपा हिकायत सहीह बुख़ारी की मुआरिज़ नहीं हो सकती।

अक़ूल : अलावा बरीं अगर यह मसऊदी अली इब्न ए हुसैन, साहिब ए मुरव्वज है तो ख़ुद राफ़ज़ी है, उसकी किताब मुरव्वजुज़ ज़हब ख़ुलफ़ा ए किराम व सहाबा इज़ाम अशरा ए मुबश्शरा वग़ैरहुम रदि अल्लाहु तआला अन्हुम पर सरीह तबर्रा से जा ब जा आलूदा व मुलव्वस है। लूत इब्न ए याहया अबू मिख़नफ़ राफ़ज़ी ख़बीस हालिक के अक़वाल व नुक़ूल ब कसरत लाता है जिसके मरदूद व तालिफ़ होने पर अइम्मा ए जिरह व ता'दील का इजमा है, इसी तरह और रुफ़्फ़ाज़ व फ़ुस्साक़ व हालिकीन के अख़बार पर उसकी किताब का मदार है जैसा कि उसके मुताला से वाज़ेह व आशकार है,

फ़क़ीर ग़ुफ़िर अल्लाहु तआला ने अपने नुस्ख़ा ए मुरव्वजुज़ ज़हब के हामिश पर इसकी तम्बीह लिख दी है। शाह अब्दुल अज़ीज़ साहिब तोह्फ़ा ए इस्ना अशरिया में फ़रमाते हैं,

ہشام کلبی مفسر کہ رافضی غالی ست و ہمچنیں مسعودی صاحب مروج الذہب و ابو الفرح اصبہانی صاحب کتاب الاغانی و علی ہذا القیاس امثال اینہا را ایں فرقہ در اعداد اہلسنت داخل کنند و بمقولات و منقولات ایشاں الزام اہلسنت خواہند۔

अल्लामा ज़रक़ानी शरह ए मुवाहिब में फ़रमाते हैं,

القول باسلام ابی طالب لا یصح قالہ ابن عساکر وغیرہ۔

अबू तालिब का इस्लाम मानना ग़लत है इमाम इब्न ए असाकिर वग़ैरह ने इसकी तसरीह की है। इसी तरह इसाबा में है।

کما سیأتی۔

अल्लामा शहाब नसीमुर रियाज़ में फ़रमाते हैं,

من الغریب ما نقلہ بعضھم ان اللہ تعالیٰ احیاہ لہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فامن بہ کابویہ و اظنہ من افتراء الشیعۃ۔

ग़राइब से है जो बाज़ ने नक़ल किया कि अल्लाह तआला ने वालिदैन रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरह अबू तालिब को भी नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए ज़िंदा किया कि बाद मर्ग जी कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए, मेरे गुमान में यह राफ़ज़ीयों की गुढ़त है।

अक़ूल : वज़्जा कज़्ज़ाब राफ़ज़ीयों ही में मुनहसर नहीं मगर यह उनके मसलक के मुवाफ़िक़ है लिहाज़ा इसके वज़अ का गुमान उन्हीं की तरफ़ जाता है फिर भी बे तहक़ीक़ जज़्म की क्या ज़रूरत, मुमकिन

कि किसी और ने वज़अ की हो, इस बिना पर लफ़्ज ए ज़न फ़रमाया वर्ना उसके मौज़ूअ व मुफ़्तरी होने में तो शुबह नहीं। कमा ला यख़फ़ा।

अल्लामा सब्बान मुहम्मद इब्न ए अली मिस्री किताब इसआफ़ुर राग़िबीन में फ़रमाते हैं,

اما اعمامه صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم فاثنا عشرة حمزة العباس و هما المسلمان و ابو طالب و الصحیح انه مات کافرا ۔

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बारह (12) चचा थे, हमज़ा व अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा और यही दो मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए और अबू तालिब और सहीह यही है कि यह काफ़िर मरे।

फ़सल ए पंजुम (5)

शरह ए मक़ासिद व शरह ए तहरीर फिर रद्दुल मोहतार हाशिया दुर्र ए मुख़्तार बाबुल मुरतद्दीन में है,

المصر علی عدم الاقرار مع المطالبة به کافر وفاقا لکون ذلك من امارات عدم التصدیق و لهذا اطبقوا علی کفر ابی طالب ۔

जिससे इक़रार ए इस्लाम का मुतालबा किया जाए और वह इक़रार न करने पर इसरार रखे बिल इत्तिफ़ाक़ काफ़िर है कि यह दिल में तस्दीक़ न होने की अलामत है, इसी वास्ते तमाम उलमा ने कुफ़्र ए अबू तालिब पर इजमा किया है। मौलाना अली क़ारी शरह ए शिफ़ा शरीफ़ में फ़रमाते हैं,

اذا امر بها و امتنع و ابی عنها کابی طالب فهو کافر بالاجماع۔

जिसे शहादत कलमा ए इस्लाम का हुक्म दिया जाए और वह बाज़ रहे और अदा ए शहादत से इंकार करे जैसे अबू तालिब तो वह बिल इजमा काफ़िर है। मिरक़ात शरह ए मिशकात में उस शख़्स के बारे में जो क़ल्ब से एतिक़ाद रखता था और बग़ैर किसी उज़्र व मानिअ के ज़बान से इक़रार की नौबत न आई, उलमा का इख़्तिलाफ़ कि यह एतिक़ाद बे इक़रार उसे आख़िरत में नाफ़ेअ होगा या नहीं, नक़ल करके फ़रमाते हैं,

قلت لکن بشرط عدم طلب الاقرار منه فان ابی بعد ذلك فکافر اجماعا لقضیة ابی طالب۔

यानी यह इख़्तिलाफ़ इस सूरत में है कि उससे इक़रार तलब न किया गया हो और अगर बाद ए तलब बाज़ रहे जब तो बिल इजमा काफ़िर है, अबू तालिब का वाक़या इस पर दलील है। उसी की फ़सल ए सानी बाब इशरातुस साअत में है,

ابو طالب لم یؤمن عند اهل السنة۔

अहले सुन्नत के नज़दीक अबू तालिब मुसलमान नहीं। शेख़ ए मुहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी शरह सफ़रुस सआदत में फ़रमाते हैं,

مشائخ حدیث و علمائے سنت بریں اند کہ ایمان ابو طالب ثبوت نہ پذیرفتہ و در صحاح احادیث ست کہ آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ

وسلم در وقت وفات وے بر سر وے آمد و عرض اسلام کرد وے قبول نہ کرد۔

फ़सल ए शशुम (6)

इमाम इब्न ए हजर मक्की अफ़ज़लुल क़ुरा लि क़ुर्रा उम्मिल क़ुरा में अबू तालिब की बैत, मर्वी सहीह बुख़ारी कि हमने शुरु जवाब में ज़िक्र की, लिखकर फ़रमाते हैं,

هذا البيت من جملة قصيدة له فيها مدح عجيب له صلى الله تعالىٰ عليه وسلم حتى اخذا الشيعة منها القول باسلامه۔

यह बैत अबू तालिब के एक क़सीदा का है जिसमें हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अजब नात है यहाँ तक कि राफ़ज़ियों ने इससे अबू तालिब का मुसलमान होना अख़्ज़ कर लिया। फिर फ़रमाते हैं,

صرائح الاحاديث المتفق على صحتها ترد ذلك۔

लेकिन साफ़ और रौशन हदीसें जिनकी सेहत पर इत्तिफ़ाक़ है इस्लाम ए अबू तालिब को रद कर रही हैं। अल्लामा मुहम्मद इब्न ए अब्दुल बाक़ी शरह ए मुवाहिब में रिवायत ए ज़ईफ़ा इब्न ए इसहाक़ कि इन शा अल्लाहु तआला अन क़रीब मय अपने जवाबों के आती है, ज़िक्र करके फ़रमाते हैं,

بهذا احتج الرفضة و من تبعهم على اسلامه۔

राफ़ज़ी और जो उनके पैरू हुए वह इसी रिवायत से अबू तालिब के इस्लाम पर सनद लाते हैं। अनवारुत तंज़ील व इरशादुल अक़्ल में ज़ेर ए आयत ए करीमा,

اِنَّكَ لَا تَهۡدِىۡ مَنۡ اَحۡبَبۡتَ

फ़रमाया,

الجمهور على انها نزلت فى ابى طالب۔

जमहूर अइम्मा के नज़दीक यह आयत दर बारा ए अबू तालिब उतरी। अल्लामा ख़फ़ाजी उसके हाशिया में फ़रमाते हैं,

اشارة الى الرد على بعض الرفضة اذ ذهب الى اسلامه۔

यह इशारा है बाज़ राफ़ज़ियों के रद की तरफ़ कि वह इस्लाम ए अबू तालिब के क़ाइल हैं। इसाबा में है,

ذكر جمع من الرفضة انه مات مسلما قال ابن عساكر فى صدر ترجمته قيل انه اسلم و لا يصح اسلامه مختصر۔

राफ़ज़ियों का एक गिरोह कहता है कि अबू तालिब मुसलमान मरे। इमाम इब्न ए असाकिर ने अपनी तारीख़ में शुरु तज़किरा ए अबू तालिब में फ़रमाया बाज़ इस्लाम ए अबू तालिब के क़ाइल हुए और यह सहीह नहीं। ज़रक़ानी में है,

الصحيح ان ابا طالب لم يسلم و ذكر جمع من الرفضة انه مات مسلما و تمسكوا باشعار و اخبار واهية تكفل بردها فى الاصابة۔

सहीह यह है कि अबू तालिब मुसलमान न हुए, राफ़ज़ियों की एक जमाअत ने उनका इस्लाम पर मरना माना और कुछ शे'रों और वाबियात से तमस्सुक किया जिनका रद इमाम हाफ़िज़ुश शान ने इसाबा में ज़िम्मा लिया। नसीम फ़सल ए कैफ़ियतुस सलात अलैहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में है,

ابو طالب توفی کافرا و ادعاء بعض الشیعة انه اسلم لا اصل له۔

अबू तालिब की मौत कुफ़्र पर हुई और बाज़ राफ़ज़ियों का दावा ए बातिला कि वह इस्लाम लाए महज़ बे अस्ल है। शेख़ ए मुहक़्क़िक़ शरह ए सिरात ए मुस्तक़ीम में फ़रमाते हैं,

شیخ ابن حجر در فتح الباری میگوید معرفت ابوطالب بہ نبوت رسول للہ صلی للہ تعالیٰ علیہ وسلم در بسیاری از اخبار آمدہ و تمسک کردہ بدان شیعہ بر اسلام وے واستدلال کردہ اند بر دعوی خود بچیزے کہ دلالت ندارد بر آں۔

उसी में है,

مخفی نماند کہ صحت اسلام ابوین بلکہ سائر آبائے وے صلی للہ تعالیٰ علیہ وسلم مشہور ست و شیعہ اسلام ابوطالب رانیز ازیں قبیل دانند اھ مختصراً۔

फ़सल ए हफ़्तुम (7)

अलहम्दु लिल्लाह कलाम अपनी निहायत को पहुंचा बाद इस क़दर नुसूस ए अलिया व जलिया क़ुरआन व हदीस व इरशादात ए सहाबा व ताबाईन व तबअ ए ताबाईन व अइम्मा ए क़दीम व हदीस

कि मुंसिफ को चारा नहीं मगर तसलीम और शुबहात का हिस्सा नहीं मगर फ़ना ए अमीम फिर भी तबयीन ए मराम व तसकीन ए औहाम मुनासिब मक़ाम। अम्र ने आठ शुबहे ज़िक्र किए और नवां कि अगर शुबह के कहने के भी कुछ क़ाबिल है तो वही है उससे मतरूक हुआ, हम उन सबको ज़िक्र करके बि तौफ़ीक़ इल्लाही तआला इज़हार ए जवाब व इबानत ए सवाब करें।

शुबह ए ऊला (1) - किफ़ालत

अक़ूल : हाँ बिल यक़ीन मगर किफ़ालत ए नबी मुस्तलज़िम ए इताअत ए नबी नहीं।

قال للہ تعالیٰ. فَالْتَقَطَهٗ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِیَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّ حَزَنًا الایۃ۔ قال تعالی. قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِیْنَا وَلِیْدًا وَّ لَبِثْتَ فِیْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِیْنَ۔

शुबह ए सानिया (2) - नुसरत व हिमायत

नक़ूल : ज़रूर मगर मुद्दआ से दूर। राफ़ज़ी इससे दलील लाए और उलमा ए अहले सुन्नत जवाब दे चुके। इसाबा में फ़रमाया,

استدل الرافضی بقول للہ تعالیٰ. فَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَ عَزَّرُوْهُ وَ نَصَرُوْهُ وَ اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ مَعَهٗۤ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ قال و قد عزرہ ابو طالب بما اشتھر و علم و نابذ قریشا و عاداھم بسببہ مما لا یدفعہ احد من نقلۃ الاخبار فیکون من المفلحین انتھی و ھذا مبلغھم من

العلم و انا نسلم انه نصره و بالغ فی ذلك لكنه لم يتبع النور الذی
معه و هو الكتاب العزيز الداعی الی التوحيد و لا يحصل الفلاح الا
بحصول ما رتب عليه من الصفات كلها۔

यानी इस्लाम ए अबी तालिब पर राफ़ज़ी इस आयत से दलील लाया कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फ़रमाता है जो लोग इस नबी पर ईमान लाए और इसकी नुसरत व मदद की और जो नूर इस नबी के साथ उतारा गया उसके पैरू हुए वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। राफ़ज़ी ने कहा, अबू तालिब की मदद व नुसरत मशहूर व मारुफ़ है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पीछे क़ुरैश से मुख़ालिफ़त की, अदावत बाँध ली जिसका कोई रावी ए अख़बार इंकार न करेगा तो वह फ़लाह पाने वालों में ठहरे। राफ़ज़ीयों की इल्म की रसाई यहाँ तक है और हम तसलीम करते हैं कि अबू तालिब ने ज़रूर नुसरत की और ब दर्जा ए ग़ायत की मगर उस नूर का इत्तिबा न किया जो हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ उतरा यानी क़ुरआन ए मजीद दाई ए तौहीद और फ़लाह तो जब मिले कि जितनी सिफ़ात पर उसे मुरत्तब फ़रमाया है सब हासिल हों।

अक़ूल : अव्वलन : यह नुसरत व हिमायत का क़िस्सा बारगाह ए रिसालत में पेश हो चुका, अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह! अबू तालिब चुनीं व चुनां करता, उसे क्या नफ़्अ मिला। जवाब जो इरशाद हुआ हदीस ए चहारुम में गुज़रा।

सानियन : बल्कि तफ़सीर इब्न ए अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा पर ख़ुद रब्बुल इज़्ज़त जवाब दे चुका कि औरों को नबी की

ईज़ा से रोकते और ख़ुद ईमान लाने से बचते हैं। देखो आयत व हदीस ए सुवम।

सालिसन : एतिबार ख़ातिमा का है,

انما الاعمال بالخواتیم ۔

जब अबू तालिब का कुफ्र पर मरना क़ुरआन व हदीस से साबित तो अब अगले क़िस्से सुनाना और ग़ुज़श्ता किफ़ालत व नुसरत से दलील लाना महज़ साक़ित। सहाह ए सित्ता में हज़रत अब्दुल्लाह इब्न ए मसऊद से एक हदीस तवील में है, रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं,

فواللہ الذی لا الہ غیرہ ان احدکم لیعمل بعمل اھل الجنۃ حتی ما یکون بینہ و بینھا الا ذراع فیسبق علیہ الکتاب فیعمل بعمل اھل النار فیدخل النار ۔

क़सम अल्लाह की जिसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं तुम में कोई शख़्स जन्नतियों के काम करता रहता है यहाँ तक कि उसमें और जन्नत में सिर्फ़ एक हाथ का फ़र्क़ रह जाता है इतने में तक़दीर ग़ालिब आ जाती है कि वह दोज़ख़ियों के काम करके दोज़ख़ में जाता है।

والعیاذ باللہ رب العٰلمین ۔

राबिअन : न सिर्फ़ इस्लाम मुस्तलज़िम ए इस्लाम न सुबूत ए ख़ास न सुबूत ए आम। सहीहैन में अबू हुरैरा रदि अल्लाहु तआला अन्हु से ही ग़ज़वा ए ख़ैबर में एक मुद्दई ए इस्लाम ने हमराह ए रकाब ए अक़दस सख़्त जिहाद और काफ़िरों से अज़ीम क़िताल किया, सहाबा

उसके मद्दाह हुए, हुज़ूर ए अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, वह दोज़ख़ी है। इस पर क़रीब था कि बाज़ लोग मुतज़लज़ल हो जाते (यानी ऐसे आली दर्जा के उम्दा काम ऐसी जलील व जमील नुसरत ए इस्लाम और उस पर नारी होने के अहकाम) बिल आख़िर ख़बर पाई कि वह मअरका में ज़ख़्मी हुआ, दर्द की ताब न लाया और रात को अपना गला काटकर मर गया। हुज़ूर ए अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यह ख़बर सुनकर फ़रमाया, अल्लाहु अकबर मैं गवाही देता हूँ कि मैं अल्लाह तआला का बंदा और उसका रसूल हूँ फिर बिलाल रदि अल्लाहु तआला अन्हु को हुक्म दिया कि लोगों में मुनादी कर दें,

انه لا يدخل الجنة الا نفس مسلمة و ان الله ليؤيد هذا الدين بالرجل الفاجر۔

बेशक जन्नत में कोई न जाएगा मगर मुसलमान जान और बेशक अल्लाह इस दीन की मदद करता है फ़ासिक़ के हाथ पर। इसी के क़रीब तबरानी ने कबीर में अम्र इब्न ए नौमान इब्न ए मुक़रिन रदि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की। नसाई व इब्न ए हिब्बान हज़रत अनस इब्न ए मालिक और अहमद व तबरानी हज़रत अबू बक्र रदि अल्लाहु तआला अन्हु से ब सनद ए जय्यिद रावी, रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं,

ان الله يؤيد هذا الدين باقوام لا خلاق لهم۔

बेशक अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल इस दीन की मदद ऐसे लोगों से फ़रमाता है जिनका कोई हिस्सा नहीं। तबरानी कबीर में हज़रत

अब्दुल्लाह इब्न ए उमर व इब्न ए आस रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रावी, रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं,

ان اللہ تعالیٰ لیؤید الاسلام برجال ما ھم من اھلہ۔

बेशक अल्लाह तआला इस्लाम की ताईद ऐसे लोगों से कराता है जो ख़ुद अहले इस्लाम से नहीं।

نسأل اللہ العفو و العافیۃ۔

शुबह ए सालिसा (3) - महब्बत

अक़ूल : बेशक मगर हद ए तबई तक जैसे चचा को भतीजे से चाहिए और भतीजे भी कैसे कि हक़ीक़ी भाई नौजवान गुज़रे हुए की इकलौती निशानी। फिर उस पुर जमाल सूरत व कमाल सीरत वह कि अपने तो अपने ग़ैर देखें तो फ़िदा हो जाए सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम। ख़ानदान हाशमी इसी चिराग़ महमूद व शमअ ए बे दूद से रौशन था। ख़ानदानी हमीयत हर आक़िल को होती है ख़ुसूसन अरब ख़ुसूसन क़ुरैश ख़ुसूसन बनी हाशिम में उसके अज़ीम माद्दा व लिहाज़ा जब आयत ए करीमा,

فَاصۡدَعۡ بِمَا تُؤۡمَرُ وَاَعۡرِضۡ عَنِ الۡمُشۡرِکِیۡنَ۔

नाज़िल हुई और सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ऐलानिया दावत ए इस्लाम शुरु की, अशराफ़ ए क़ुरैश जमा होकर अबू तालिब के पास गए और कहा कि तमाम अरब में सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत और सबसे बढ़कर अच्छी उठान वाला लड़का

हम से ले लो उसे बजाए मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम परवरिश करो और उन्हें हम को दे दो। और इसी इरादा ए फ़ासिद पर अम्मारा इब्न ए वलीद को लेकर गए थे कि अबू तालिब ने माना तो उसे उन्हें दे देंगे। अबू तालिब ने कहा,

و اللہ لبئس ما تسوموننی اتطوننی ابنکم اغذوہ لکم و اعطیکم ابنی تقتلونہ ھذا و اللہ ما لا یکون ابدا حین تروح الابل فانہ حنت ناقۃ الی غیر فصیلھا دفعتہ الیکم ۔

ख़ुदा की क़सम क्या बुरी गाहकी मेरे साथ कर रहे हो, क्या तुम अपना बेटा मुझे दो कि मैं तुम्हारे लिए उसे खिलाऊं, परवरिश करुं और मैं अपना बेटा तुम्हें दे दूं कि तुम उसे क़त्ल करो, ख़ुदा की क़सम यह कभी होनी नहीं, जब ऊंट शाम को निकलते हैं तो अगर कोई नाक़ा अपने बच्चे को छोड़कर दूसरे की तरफ़ मेल करती हो तो मैं भी तुमसे अपना बेटा बदल लूं।

لخصناہ حدیث ابن اسحٰق ذکرناہ بلاغا و من حدیث مقاتل ذکرہ فی المواہب۔

अबू तालिब ने साफ़ बता दिया कि उनकी महब्बत वही है जो इंसान तो इंसान हैवान को भी अपने बच्चे से होती है, ऐसी महब्बत ईमान नहीं, ईमान हुब्ब ए शरई है, अबू तालिब में इसकी शान नहीं, महब्बत ए शरई व ईमानी होती तो नार को आर पर इख़्तियार और दम ए मर्ग कलमा ए तय्यबा से इंकार और मिल्लत ए जाहिलियत पर इसरार क्यों होता।

इमाम क़सतलानी इरशादुस सारी में फ़रमाते हैं,

قد كان ابو طالب يحوطه صلى الله تعالىٰ عليه وسلم و ينصره و يحبه حبا طبعيا لا شرعيا فسبق القدر فيه و استمر على كفره و لله الحجة السامية۔

यानी अबू तालिब ने हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नुसरत व हिमायत सब कुछ की, तबई महब्बत बहुत कुछ रखी मगर शरई महब्बत न रखी आख़िर तक़दीर इलाही ग़ालिब आई और मआज़ अल्लाह कुफ़्र पर वफ़ात पाई। और अल्लाह ही के लिए है हुज्जत बलंद।

नसीमुर रियाज़ में है,

حنونه على النبى صلى الله تعالىٰ عليه وسلم و محبته له امر مشهور فى السير و كان يعظمه و يعرف نبوته و لكن لم يوفقه الله للاسلام و فى الامتاع ان فيه حكمة خفية من الله تعالىٰ لانه عظيم قريش لا يمكن احدا منهم ان يتعدى على ما فى جواره فكان النبى صلى الله تعالىٰ عليه وسلم فى بدء امره فى كنف حمايته يذبهم عنه كما قال ع و الله لن يصلوا اليك بجمعهم ــ حتى اوسد فى التراب دفينا۔ فلو اسلم لم يكن له ذمة عندهم و لذا لم يكن له صلى الله عليه وسلم بعد موته بد من الهجرة۔

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ अबू तालिब की मेहर व महब्बत मशहूर है और ताज़ीम व मारिफ़त ए नबूवत मालूम

मगर अल्लाह तआला ने मुसलमान होने की तौफ़ीक़ न दी, और किताबुल इमताअ में फ़रमाया, अबू तालिब के मुसलमान न होने में अल्लाह तआला की एक बारीक हिकमत है, वह सरदार ए क़ुरैश थे, कोई उनकी पनाह पर तअद्दी न कर सकता था, हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इब्तिदा ए इस्लाम में उनकी हिमायत में थे, वह मुख़ालिफ़ों को हुज़ूर से दफ़अ करते थे, ख़ुद एक शे'र में कहा है, ख़ुदा की क़सम तमाम क़ुरैश इकठ्ठे हो जाएं तो हुज़ूर तक न पहुंच सकेंगे जब तक मैं ख़ाक में दबा कर लिटा न दिया जाऊं। तो अगर वह इस्लाम ले आते क़ुरैश के नज़दीक उनकी पनाह कुछ न रहती, आख़िर उनके इंतिक़ाल पर हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को हिजरत ही फ़रमानी हुई।

अक़ूल : क़ुर्ब ए इंतिक़ाल तक इस्लाम न लाने की यह हिकमत हो सकती है, मरते वक़्त कुफ़्र पर इसरार की हिकमत अल्लाह जाने या उसका रसूल। शायद इसमें, अव्वलन : यह नुकता हो कि अगर इस्लाम लाकर मरते मुख़ालिफ़ गुमान करते कि अल्लाह के रसूल ने हमारे साथ मआज़ अल्लाह फ़रेब बरता, अपने चचा को मुसलमान तो कर लिया था मगर पनाह व ज़िम्मा रखने के लिए ज़ाहिर न होने दिया जब अख़ीर वक़्त आया कि अब वह काम न रहा ज़ाहिर करवाया।

सानियन : उन मुसलमानों की तसकीन भी है जिनके बुज़ुर्ग हालत ए कुफ़्र में मरे जिसका पता हदीस,

ان ابی و اباک۔

देती है, अव्वल नागवार हुआ जब अपने चचा को शामिल फ़रमाया सुकून पाया।

सालिसन : मुसलमानों के लिए उसवा ए हसना क़ाइम फ़रमाना कि अपने अक़ारिब जब ख़ुदा के ख़िलाफ़ हों उनसे बराअत करें, मरने पर जनाज़ा में शरीक न हों, नमाज़ न पढ़ें, दुआ ए मग़फ़िरत न करें कि जब ख़ुद अपने हबीब को मना फ़रमाया तो औरों की क्या गिनती।

राबिअन : अमल में इख़्लास लिल्लाह व ख़ौफ़ व इन्क़ियाद की तरग़ीब और महबूबान ए ख़ुदा से निस्बत पर फूल बैठने से तरहीब, जब अबू तालिब को ऐसी निस्बत ए क़रीबा ब इंकारहा ए अजीबा ब वजह ए ना मुन्क़ादी काम न आई तो और क्या चीज़ है।

الی غیر ذلك مما اللّٰہ و رسولہ بہ اعلم جل جلالہ و صلی اللّٰہ تعالیٰ علیہ وسلم۔

शुबह ए राबिया (4) - नात शरीफ़

अक़ूल : यह तो और हुज्जत ए इलाहीया क़ाइम होना है जब ऐसा जानते हो फिर क्यों नहीं मानते, यहूद अनूद क़ब्ल ए तुलू ए शम्स ए रिसालत क्या कुछ नात व मिदहत न करते, जब कोई मुश्किल आती, मुसीबत मुंह दिखाती हुज़ूर से तवस्सुल करते, जब दुश्मन का मुक़ाबला होता दुआ मांगते,

اللھم انصرنا علیھم بالنبی المبعوث فی اٰخر الزمان الذی نجد صفتہ فی التوراۃ۔

इलाही हमें उन पर मदद दे सदक़ा नबी आख़िरुज़ ज़मां का जिसकी नात हम तौरेत में पाते हैं। फिर जानकर न मानने का क्या नतीजा हुआ, यह जो क़ुरआन ए अज़ीम ने फ़रमाया,

وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۔

इसाबा में फ़रमाते हैं,

اما شهادة ابی طالب بتصدیق النبی صلی ﷲ تعالیٰ علیه سلم فالجواب عنه و عما ورد من شعر ابی طالب فی ذلك انه نظیر ما حکی ﷲ تعالیٰ عن کفار قریش وَ جَحَدُوْا بِهَا وَ اسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّ عُلُوًّا فکان کفرهم عنادا و منشؤه من الانفة و الکبر و الی ذلك اشار ابو طالب بقوله لو لا ان تعیرنی قریش ۔

यानी अबू तालिब के अशआर वग़ैरहा (जिनमें तस्दीक़ ए नबी की शहादत है) का जवाब यह है कि वह उसी क़बील से हैं जो क़ुरआन ए अज़ीम ने कुफ़्फ़ार का हाल बयान फ़रमाया कि ब राह ए ज़ुल्म व तकब्बुर मुन्किर होते और दिल में ख़ूब यक़ीन रखते हैं तो यह कुफ्र ए इनाद हुआ और उसका मंशा तकब्बुर और अपने नज़दीक बड़ी नाक वाला होना है, ख़ुद अबू तालिब ने इसकी तरफ़ इशारा किया है कि अगर क़ुरैश की तानाज़नी का ख़्याल न होता तो इस्लाम ले आता।

शुबह ए ख़ामिसा (5) - हुज़ूर का इस्तग़फ़ार फ़रमाना

अक़ूल : अव्वलन : इसका जवाब ख़ुद रब्बुल अरबाब जल्ला जलालुहु दे चुका, हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने क़ैद लगा दी थी,

مالم انه عنه۔

तेरे लिए इस्तग़फ़ार फ़रमाऊंगा जब तक मना न किया जाऊंगा। रब्बुल इज़्ज़त जल्ला जलालुहु ने मना फ़रमा दिया अब उससे इस्तिनाद ख़र्तुल क़ताद।

सानियन : ख़ुद यह वादा ही कलमा ए तय्यबा से इंकार सुनकर इरशाद हुआ था, देखो हदीस ए दुवम फिर उसे दलील इस्लाम ठहराना अजब है।

शुबह ए सादिसा (6) - हिकायत ए जामिउल उसूल

अक़ूल : सय्यिद ए अहले बैत रदि अल्लाहु तआला अन्हुम मौला अली कर्रम अल्लाहु तआला वजहहुल करीम अबू तालिब को मुशरिक कहते, ब वस्फ़ ए हुक्म ए अक़दस ग़ुस्ल व कफ़न में ताम्मुल अर्ज़ करते, सय्यिदुस सादात सय्यिदुल कायनात अलैहि व आलिहि अफ़ज़लुस सलात व अकमलुत तहियात उसे मुक़र्रर रखते, जनाज़ा में शिरकत से बाज़ रहते, सय्यिदुना जाफ़र इब्न ए अबी तालिब व अमीरुल मोमिनीन अली रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा ब वजह इस्लाम तरका ए कुफ़्फ़ार

से महरूमी पाते, सय्यिद इमाम ज़ैनुल आबिदीन रदि अल्लाहु तआला अन्हु इसकी वजह कुफ़्र ए अबी तालिब बयान फ़रमाते। अमीरूल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ रदि अल्लाहु तआला अन्हु ख़ुतन ए अहले बैत से काफ़िर का तरका मोमिन को न मिलने की दलील ठहराते। सय्यिदुना अब्बास अम्मे रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम व रदि अल्लाहु तआला अन्हु उनके हाल से सवाल कर वह जवाब पाते, सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा आयत,

وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّا اَنْفُسَهُمْ۔

का अबू तालिब के हक़ में नुज़ूल बताते और सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से हदीस ए हशतुम और उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा ज़ौजा ए रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हदीस ए हफ़तुम, अमीरुल मोमिनीन अली बिरादर ए रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हदीस ए पांज़दहुम रिवायत फ़रमाते हैं, यह सरवरान व सरदारान ए अहले बैत किराम हैं रदि अल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन, इनके बाद वह कौन से अहले बैत क़ाइल ए इस्लाम ए अबू तालिब हुए, क्या क़ुरआन व हदीस व अतबाक़ अइम्मा ए क़दीम व हदीस के मुक़ाबिल ऐसी हिकायात ए बे ज़िमाम व ख़िताम कुछ काम दे सकती हैं। हाशा ला जरम शेख़ ए मुहक़्क़िक़ मदारिजुन नबूवत में फ़रमाते हैं,

از اعمام پیغمبر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم غیر حمزہ و عباس مسلمان
نہ شدہ اند و ابو طالب و ابو لہب زمان اسلام را دریافتہ اما توفیق

اسلام نیافتہ جمہور علماء برین اند و صاحب جامع الاصول آوردہ کہ زعم اہل بیت آن ست کہ ابو طالب مسلمان از دنیا رفتہ و اللہ اعلم بصحتہ کذا فی روضۃ الاحباب۔

अक़ूल : उलमा का जा ब जा कुफ़्र ए अबी तालिब पर इजमा नक़्ल फ़रमाना और इस्लाम ए अबू तालिब का क़ौल मज़ऊम रवाफ़िज़ बताना जिसकी नुक़ूल अगले फ़ुसूल में मज़कूर व मनक़ूल, इस हिकायत ए बे सरोपा के रद को बस है, क्या ब वस्फ़ ए ख़िलाफ़ ए अइम्मा ए अहले बैत इजमा मुनअक़िद हो सकता है या मआज़ अल्लाह उनका ख़िलाफ़

لا یعتد بہ۔

ठहरा कि दावा ए इत्तिफ़ाक़ फ़रमा दिया जाता और जब ख़ुद अपने अइम्मा ए किराम में ख़िलाफ़ हासिल तो जानिब ए अजानिब आनी रवाफ़िज़ क़स्र निस्बत पर क्या हामिल पस इंदत तहक़ीक़ यह हिकायत बे अस्ल और मुहक्की अन्हु मादूम व बातिल, हाँ अगर सादात ए ज़ैदीया कि एक फ़िरक़ा ए रवाफ़िज़ है मुराद हों तो अजब नहीं और शुबह ज़ाइल।

शुबह ए साबिया (7) - इबारत ए शरह ए सफ़रुस सआदत

अक़ूल : यह तोहमत महज़ है, शेख़ ए मुहक़्क़िक़ रहमतुल्लाहि अलैहि की इबारतें ख़ुद इसी शरह सिरातुल मुस्तक़ीम वग़ैरह तसानीफ़ से ऊपर गुज़र चुकीं जो इसकी तकज़ीब को बस हैं। शेख़ फ़रमाते हैं,

हदीस ए सहीह अबू तालिब का कुफ़्र साबित करती है, उलमा ए अहले सुन्नत अबू तालिब को काफ़िर मानते हैं, शिया उन्हें मुसलमान जानते हैं उनके दलाइल मरदूद व बातिल हैं। इन सब तसरीहात के बाद तवक़्क़ुफ़ का क्या महल, हाँ यह इबारत मदारिज शरीफ़ में निस्बत ए आबा व अजदाद ए हुज़ूर सय्यिद ए अनाम अलैहि अफ़ज़लुस सलात वस्सलाम तहरीर फ़रमाइ है,

حیث قال متاخران ثابت کردہ اند کہ آباء واجداد آں حضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پاک و مصفا بودند از دنس شرک وکفر باری کم ازاں نہ باشد کہ دریں مسئلہ توقف کنند وصرفہ نگاہ دارند۔

शुबह ए सामिना (8)- वसीयत नामा

अक़ूल : अव्वलन : वह एक हिकायत ए मुन्क़ता है जिसका मन्तहा ए सनद एक राफ़ज़ी ग़ाली, मुवाहिब शरीफ़ में जिससे अम्र नाक़िल यह वसीयत नामा यूँ मनक़ूल,

حکی عن هشام بن السائب الکلبی او ابیه انه قال لما حضرت ابا طالب الوفاة جمع الیه وجوه قریش الخ۔

यानी हिशाम इब्न ए साइब कलबी कूफ़ी या उसके बाप कलबी से हिकायत की गई कि अबू तालिब ने मरते वक़्त उमदागान ए क़ुरैश को जमा करके वसीयत की। हिशाम व कलबी दोनों राफ़ज़ी मलऊन हैं।

मीज़ानुल एतिदाल में है,

قال البخاری ابو النضر الکلبی ترکہ یحیی و ابن مھدی قال علی ثناء یحیی عن سفیٰن قال الکلبی کلما حدثتك عن ابی صالح فھو کذب و قال یزید بن زریع ثناء الکلبی و کان سبائیا قال الاعمش اتق ھذہ السبائیۃ فانی ادرکت الناس و انما یسمونھم الکذابین، التبوذکی سمعت ھما ما یقول سمعت الکلبی یقول انا سبائی عن ابی عوانۃ سمعت الکلبی یقول انا سبائی عن ابی عوانۃ سمعت الکلبی یقول کان جبرئیل یملی الوحی علی النبی صلی ﷲ تعالیٰ علیہ وسلم فلما دخل النبی صلی ﷲ تعالیٰ علیہ وسلم الخلاء جعل یملی علی علی، قال الجوز جانی وغیرہ کذاب و قال الدار قطنی و جماعۃ متروك و قال ابن حبان مذھبہ فی الدین و وضوع الکذب فیہ اظھر من ان یحتاج الی الاغراق فی وصفہ لا یحل ذکرہ فی الکتاب فکیف الاحتجاج بہ اھ ملتقطا۔

इमाम बुख़ारी ने फ़रमाया अबू नज़र कलबी को इमाम याहया इब्न ए मुईन व इमाम अब्दुर रहमान इब्न ए महदी ने उसे मतरूक कहा। इमाम सुफ़यान फ़रमाते हैं, मुझसे कलबी ने कहा जितनी हदीसें मैंने आपके सामने अबू सालेह से रिवायत की हैं वह सब झूठ हैं। यज़ीद इब्न ए ज़रीअ ने कहा, कलबी राफ़ज़ी था। इमाम सुलेमान आमश ताई ने फ़रमाया कि इन राफ़ज़ीयों से बचो, मैंने उलमा को पाया कि इनका नाम कज़्ज़ाब रखते थे। तबूज़की कहते हैं मैंने हुमाम से सुना वह कहते हैं कि मैंने ख़ुद कलबी को कहते सुना कि मैं राफ़ज़ी हूँ। अबू अवानह कहते हैं कलबी ने मेरे सामने कहा कि जिबरील नबी को वही लिखाते

थे जब हुज़ूर बैतुल ख़ला को तशरीफ़ ले जाते तो मौला अली (कर्रमाल्लाहु तआला वजहहुल करीम) को लिखाने लगते। जुज़जानी वग़ैरह ने कहा, कलबी कज़्ज़ाब है। दार क़ुतनी और एक जमाअत ए उलमा ने कहा, मतरूक है। इब्न ए हिब्बान ने कहा उसका मज़हब दीन में और उसमें किज़्ब का वुज़ुअ ऐसा रौशन है कि मोहताज बयान नहीं, किताबों में उसका ज़िक्र करना हलाल नहीं और न उससे सनद लाना।

उसी में है,

هشام بن محمد بن السائب الكلبي قال احمد بن حنبل انما كان صاحب سمر و نسب ما ظننت ان احدا يحدث عنه و قال الدار قطنی وغيره متروك و قال ابن عساكر رافضی ليس بثقة ۔

इमाम अहमद ने कलबी के बेटे हिशाम की निस्बत फ़रमाया, वह तो यही कुछ कहानियां, कुछ नसब नामे जानता था, मुझे गुमान न था कि कोई उससे हदीसें रिवायत करेगा। इमाम दार क़ुतनी वग़ैरह ने फ़रमाया, मतरूक है। इमाम इब्न ए असाकिर ने कहा, राफ़ज़ी ना मो'तमद है।

सानियन : ख़ुद इसी वसीयत नामा में वह लफ्ज़ मनक़ूल जिनमें साफ़ अपने हाल की तरफ़ इशारा है कि उन हाज़िरीन से कहा,

قد جاء بامر قبله الجنان و انكره اللسان مخافة الشنان ۔

मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हमारे पास वह बात लेकर आए जिसे दिल ने माना और ज़बान ने इंकार किया इस ख़ौफ़ से कि लोग दुश्मन हो जाएंगे। अल्लामा ज़रक़ानी इसकी शरह में फ़रमाते हैं,

لما تعيرونه به من تبعيته لابن اخيه۔

यानी वह ख़ौफ़ यह है कि तुम ऐब लगाओगे कि वह अपने भतीजे का ताबेअ हो गया। यानी भतीजा तो बेटे की मिस्ल है उन्हें इमाम बनाते आप ग़ुलाम बनते आर आती है, तुम ताना करोगे इसलिए इस्लाम से इंकार है अगरचे दिल पर उनका सिदक़ आशकार है।

सालिसन : नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बाब में उनसे बाज़ वसाया ज़रूर मनक़ूल मगर जब औरों को वसीयत हो ख़ुद जाहिली हमीयत हो तो उससे क्या हुसूल।

قال لله تعالىٰ، كَبُرَ مَقتًا عِندَ اللهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ۔

अल्लाह को सख़्त दुश्मन है यह बात कि कहो और न करो। तंदुरुस्ती में भी यही बर्ताव था कि औरों को तरग़ीब देना और आप बचना, वही अंदाज़ वक़्त ए मर्ग बरता।

इसाबा में फ़रमाया,

و هو امر ابی طالب و لدیه باتباعه فترکه ذلك هو من جملة العناد و هو ايضاً من حسن نصرته له و ذبه عنه و معاداته قومه بسببه۔

रहा अबू तालिब का अपने बेटों हैदर ए कर्रार व जाफ़र तय्यार रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से कहना कि पैरवी करो और ख़ुद उसका तरक करना यह इनाद में से है और यह तरग़ीब ए पैरवी भी उनकी इसी ख़ूबी मदद व हिमायत और हुज़ूर के बाइस अपनी क़ौम से मुख़ालिफ़त ही में दाख़िल है यानी जहाँ वह सब कुछ था, ईं हम बर इल्म ए ईमान

बे इज़आन मिलना क्या इमकान व लिहाज़ा उलमा ए किराम जहाँ अबू तालिब से यह उमूर नक़ल फ़रमाते हैं वहीं मौत अलल कुफ़्र की भी तसरीह कर जाते हैं, इसी मवाहिबुल लदुन्निया और उनकी दूसरी किताब इरशादुस सारी के कितने कलिमात ऊपर गुज़रे।

मजमउल बिहार में है,

فی العاشرۃ دنا موت ابی طالب فوصی بنی المطلب باعانته صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم و مات فقال علی رضی اللہ تعالیٰ عنه ان عمك الضال قد مات قال فاغسله و کفنه و وارہ غفر اللہ له فجعل یستغفر له ایاما حتی نزل مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ ـ

यानी नबूवत से दसवें साल अबू तालिब को मौत आई, बनी अब्दुल मुत्तलिब को मददगारी ए नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की वसीयत करके मर गए, इस पर मौला अली कर्रमाल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने अर्ज़ की, हुज़ूर का चचा मर गया। फ़रमाया, नहला कफ़ना कर दबा दे, अल्लाह उसे बख़्शे, दुआ ए मग़फ़िरत फ़रमाते रहे यहाँ तक कि आयत उतरी नबी को रवा नहीं कि मुशरिकों जहन्नमियों की बख़्शिश मांगे।

अल्लामा हफ़नी हाशिया ए हमज़िया में लिखते हैं,

قال القرطبی فی المفهم کان ابو طالب یعرف صدق رسول اللہ تعالیٰ علیه وسلم فی کل ما یقوله و یقول لقریش تعلمون اللہ ان محمدا لم یکذب قط و یقول لابنه علی اتبعه فانه علی الحق غیر انه لم یدخل فی الاسلام و لم یزل علی ذلك حتی حضوته الوفاۃ فدخل علیه رسول

اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم طامعاً فی اسلامہ حریصاً علیہ باذلا فی ذلک جهده مستفرغا ما عنده و لكن عاقت عن ذلك عوائق الاقدار التی لا ینفع معها حرص و لا اعتذار۔

यानी इमाम क़ुरतुबी ने मुफ़हिम शरह ए सहीह मुस्लिम में फ़रमाया, अबू तालिब ख़ूब जानते थे कि रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जो कुछ फ़रमाते हैं सब हक़ है, क़ुरैश से कहते ख़ुदा की क़सम तुम्हें मालूम है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कभी कोई कलमा ख़िलाफ़ ए वाक़ेअ न फ़रमाया, अपने बेटे अली कर्रमाल्लाहु वजहहु से कहते उनके पैरू रहना कि यह हक़ पर हैं, सब कुछ था मगर ख़ुद इस्लाम में न आए, मौत आने तक इसी हाल पर रहे उस वक़्त हुज़ूर ए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उनके पास तशरीफ़ फ़रमा हुए इस उम्मीद पर कि शायद मुसलमान हो जाएं, इसकी हुज़ूर को सख़्त ख़्वाहिश थी, जो कुछ कोशिश मुमकिन थी सब ख़र्च फ़रमा दी मगर वह तक़दीरें आड़े आईं जिनके आगे न ख़्वाहिश चलती है न उज़्र।

و حسبنا اللہ و نعم الوکیل و لا حول و لا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔

शुबह ए तासिया (9)

अलहम्दु लिल्लाहि अम्र के सब शुबहात हल हो गए और वह शुबहात ही क्या थे महज़ मोहमलात थे, अब एक शुबह बाक़ी रहा जिससे ज़माना ए क़दीम में बाज़ रवाफ़िज़ ने अपने रिसाला 'इस्लाम

ए अबी तालिब' में इसतिनाद किया और अकाबिर अइम्मा ए अहले सुन्नत मिस्ल इमाम अजल्ल बैहक़ी व इमाम ए जलील सुहेली व इमाम हाफ़िज़ुश शान इब्न ए हजर असक़लानी व इमाम बदरुद्दीन महमूद ऐनी व इमाम अहमद क़स्तलानी व इमाम इब्न ए हजर मक्की व अल्लामा हसन दियार बकिरी व अल्लामा मुहम्मद ज़रक़ानी व शेख़ ए मुहक़्क़िक़ देहलवी वग़ैरहुम रहमहुम उल्लाहि तआला ने मुतअदद वुजुह से जवाब दिया। सुन्नी के लिए तो इसी क़दर से जवाब ज़ाहिर हो गया कि इस्तिदलाल करने वाला एक राफ़ज़ी और जवाब देने वाले अइम्मा व उलमा ए अहले सुन्नत मगर ततमीम फ़ायदा के लिए फ़क़ीर ग़ुफ़िरालहुल मौलल क़दीर वह शुबह और उलमा के अजवबा ज़िक्र करके जो कुछ फ़ैज़ ए क़दीर से क़ल्ब ए फ़क़ीर पर फ़ाइज़ हुआ तहरीर करे व बिल्लाहित तौफ़ीक़। इब्न ए इसहाक़ ने सीरत में एक रिवायत शाज़्ज़ा ज़िक्र की जिसका ख़ुलासा यह है कि अबू तालिब के मर्ज़ुल मौत में अशराफ़ ए क़ुरैश जमा होकर उनके पास गए कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को समझा दो कि हमारे दीन से ग़रज़ न रखें हम उनके दीन से तअर्रुज़ न करें। अबू तालिब ने हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को बुलाकर अर्ज़ की। हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, हाँ यह एक बात कह लें जिससे तुम तमाम अरब के मालिक हो जाओ और अजम तुम्हारे मुतीअ। अबू जहल लईन ने अर्ज़ की हुज़ूर ही के बाप की क़सम एक बात नहीं दस बातें। फ़रमाया, तो ला इलाहा इल्लल्लाह कह लो। इस पर काफ़िर तालियां बजाकर भाग गए। अबू तालिब के मुंह से निकला, ख़ुदा की क़सम हुज़ूर ने कोई बेजा बात तो उनसे न चाही थी। इस कहने से सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम को उम्मीद पड़ी कि शायद यही मुसलमान हो जाए, हुज़ूर ने बार बार फ़रमाना शुरु किया, ऐ चचा! तू ही कह ले जिसके सबब से मैं तेरी शफ़ाअत रोज़ ए क़यामत हलाल कर लूं, जब अबू तालिब ने हुज़ूर की शिद्दत ए ख़्वाहिश देखी तो कहा, ऐ भतीजे मेरे ख़ुदा की क़सम अगर यह ख़ौफ़ न होता कि लोग हुज़ूर को और हुज़ूर के बाप (यानी ख़ुद अबू तालिब) के बेटों को ताना देंगे कि नज़अ की सख़्ती पर सब्र न हुआ, कलमा पढ़ लिया, तो मैं पढ़ लेता और वह भी इस तरह पढ़ता,

لا اقولها الا لاسرك بها۔

(मैं न कहता वह कलमा मगर इसलिए कि आपको ख़ुश करुं) सिर्फ़ इसलिए कि हुज़ूर की ख़ुशी कर दूँ। यह बातें नज़अ में तो हो ही रही थीं जब रुह परवाज़ करने का वक़्त आया अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने उनके लबों की जुम्बिश देखी कान लगाकर सुना, हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ की,

يا ابن اخى و الله لقد قال اخى الكلمة التى امرته ان يقولها۔

ऐ मेरे भतीजे! ख़ुदा की क़सम मेरे भाई ने वह बात कह ली जो हुज़ूर ए अक़दस उससे कहलवाते थे।

قال فقال رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم لم اسمع۔

सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मैंने न सुनी।

यह वह रिवायत है उलमा ने इससे पांच जवाब दिए।

अव्वल : यह रिवायत ज़ईफ़ व मरदूद है, इसकी सनद में एक रावी मुबहम मौजूद है। यह जवाब इमाम बैहक़ी फिर इमाम हाफ़िज़ुश शान इब्न ए हजर असक़लानी व इमाम बदरुद्दीन ऐनी व इब्न ए हजर मक्की व अल्लामा हुसैन दियार बिक्री व अल्लामा ज़रक़ानी वग़ैरहुम ने इफ़ादा फ़रमाया।

ख़मीस में है,

قال البیہقی انہ منقطع الخ و سیأتی تمامہ۔

उमदतुल क़ारी में है,

فی سندہ من لم یسم۔

शरह ए मुवाहिब में है,

روایۃ ابن اسحٰق ضعیفہ۔

उसी में है,

فیہ من لم یسم۔

शरह ए हमज़िया में है,

روایۃ ضعیفۃ عن العباس انہ اسر الیہ الاسلام عند موتہ۔

इसाबा में है,

لقد وقفت علی تصنیف لبعض الشیعۃ اثبت فیہ اسلام ابی طالب منہا ما اخرجہ عن محمد بن اسحٰق الٰی ان قال بعد نقل متمسکات الرافضی اسانید ہذہ الاحادیث واھیۃ۔

यानी मैंने एक राफ़ज़ी का रिसाला देखा जिसमें उसने बाज़ रिवायात से इस्लाम ए अबी तालिब साबित करना चाहा है अज़ां जुमला यह रिवायत ए इब्न ए इसहाक़ है, उन सबकी सनदें वाही हैं।

अक़ूल :

و بالله التوفيق ههنا امور يجب التنبه لها۔اولها : ليس المنقطع ههنا فى كلام البيهقى بالاصطلاح المشهور عند الجمهور انه الذى سقط من سنده راو اما مطلقاً او بشرط ان لايسقط ازيد من واحد على التوالى و هو المرسل على الاول او منه على الثانى باصطلاح الفقهاء و اهل الاصول و اذا نظفت رجاله فعندنا و عند الجمهور مقبول كيف و ذلك خلاف الواقع فى رواية ابن اسحٰق فان سنده على ما رأيت فى سيرة ابن ہشام و نقله الحافظ وغيره فى الفتح وغيره هكذا حدثنى العباس بن عبد الله بن معبد عن بعض اهله عن ابن عباس رضى الله تعالىٰ عنهما و هذا لا انقطاع فيد كما ترى و لا مساغ لا رادة الانقطاع من قبل ان ابن عباس لم يدرك الواقعة فانه انما ولد عام مات ابو طالب ولد قبل الهجرة بثلث سنين كما فى التقريب و كذلك ارخ ابن الجزار موت ابى طالب قبل هجرته صلى الله تعالىٰ عليه وسلم بثلث سنين كما فى المواہب و ذلك لان مراسيل الصحابة مقبولة بالاجماع و لا عبرة بمن شذ فى تقريب النووى هذا كله فى غير مرسل الصحابى اما مرسله فمحكوم بصحته على المذهب الصحيح قال فى التدريب قطع به

الجمهور من اصحابنا وغيرهم و اطبق عليه المحدثون و فی مسلم
الثبوت ان کان من الصحابی يقبل مطلقا اتفاقا و لا اعتداد لمن خالف
اھ و انما سماہ البيقهی منقطعا علی اصطلاح له و لشيخه الحاکم ان
المبهم ايضا من المنقطع فی التقريب و التدريب (اذا قال) الراوی فی
الاسناد (فلان عن رجل عن فلان فقال الحاکم) هو (منقطع ليس
مرسلا و قال غيره مرسل) قال العراقی کل من القولين خلاف ما عليه
الاکثرون فانهم ذهبوا الی انه متصل فی سنده مجهول و زاد البيهقی
علی هذا فی سننه فجعل ما رواه التابعی عن رجل من الصحابة لم يسم
مرسلا اھ مختصرا و فيهما (النوع العاشر المنقطع الصحيح الذی
ذهب اليه الفقهاء و الخطيب و ابن عبد البر وغيرهما من المحدثين
ان المنطقع ما لم يتصل اسناده علی ای وجه کان انقطاعه) فهو و
المرسل واحد (و اکثر ما يستعمل فی رواية من دون التابعی عن
الصحابة کمالك عن ابن عمر و قيل هو ما اختل منه رجل قبل
التابعی) الصواب قبل الصحابی (محذوفا کان) الرجل (او مبهما کرجل)
هذا بناء علی ما تقدم ان فلانا عن رجل سيمی منقطعا و تقدم ان
فلانا عن رجل سيمی منقطعا و تقدم ان الاکثرين علی خلافه ثم ان
هذا القول هو المشهور بشرط ان يکون الساقط واحدا فقط او اثنين لا
علی التوالی کما جزم به العراقی و شيخ الاسلام اھ ملخصاً۔ ثانيها ليس
المبهم من المجهول المقبول عندنا و عند کثير من الفحول او

اکثرھم فان الراوی اذا لم یرو عنه الا واحدا فمجھول العین نمشیه
نحن و کثیر من المحققین و اذا زکی ظاھرا لا باطنا فمستور نقبله نحن
و اکثر المحققین کما بینته فی منیر العین فی حکم تقبیل الابھامین و
ظاھر ان شیئا من ھذا الا یعرف الا بالتسمیة فالمبھم لیس منھما فی
شیئ بل ھو کمجھول الحال الذی لم تعرف عدالته باطن و لا ظاھرا و
ان خصصناہ ایضا بمن سمی فلیس من المجھول المصطلح علیه اصلاً و
ان کان یطلق علیه اسم المجھول نظرا الی المعنی اللغوی و تحقیق
الحکم فیه ان ابھام راو غیر الصابی بغیر لفظ التعدیل کحدثنا و ثقة
لیس کحذفه عندنا فی القبول فان الجزم مع الاسقاط امارۃ الاعتماد
بخلاف الاسناد قال فی مسلم الثبوت و شرحه فواتح الرحموت (قال
رجل لا یقبل فی) المذھب (الصحیح) و لیس ھذا کالارسال کما نقل
عن شمس الائمة لان ھذا روایة عن مجھول و الارسال جزم بنسبة
المتن الی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم و ھذا لا یکون الا
بالتوثیق فافترقا (بخلاف) قال ثقه او رجل من الصحابة لان ھذا
روایة عن ثقة لان الصحابة کلھم عدول (و لو اصطلح علی معین)
معلوم العدالة علی التعیین برجل (فلا اشکال) فی القبول اھ اقول و
یترا أی لی استثناء من ابھم و قد علم من عادته انه لا یروی الا عن
ثقة کامامنا الاعظم و الامام احمد وغیرھما ممن سمیناھم فی منیر
العین فان المبھم امام من مجھول الحال او کمثله و قد صرحوا فیه

بہذا التفصیل قال فی الکتابین (فی روایۃ العدل) عن المجہول (مذاہب) احدہا (التعدیل) فان شان العدل لا یروی الا عن عدل (و) الثانی (المنع) لجواز روایتہ تعویلا علی المجتہد انہ لا یعمل الا بعد التعدیل (و) الثالث (التفصیل بین من علم) من عادتہ (انہ لا یروی الا عن عدل) فیکون تعدیلا (اولا) فلا (و ہو) ای الثالث (الاعدل) و ہو ظاہر اہ باختصار۔ ثالثہا لیس الحکم علی کافر معلوم الکفر لا سیما المدرک صحۃ لغویۃ بطریان الاسلام من باب الفضائل المقبول فیہ الضعاف باتفاق الاعلام، کیف و انہ یبتنی علیہ کثیر من الاحکام کتحریم ذکرہ الا بخیر و وجوب تعظیمہ بطلب الترضی علیہ اذا ذکر بعد ما کان ذاک حراما بل ربما المنجر الی الکفر و العیاذ باللّٰہ تعالیٰ و قبول قولہ فی الروایات ان وقعت الی غیر ذلک و الیقین لا یزول الشک و الضعیف لا یرفع الثابت و انما السر فی قبول الضعاف حیث تقبل انہا ثمہ لم تثبت شیئا لم یثبت کما حققناہ بما لا مزید علیہ ما دفع الاوہام المتطرقۃ الیہ فی رسالتنا الہادا الکاف فی حکم الضعاف فاذا لم تکن لتثبت ما لم یثبت فکیف ترفع ما قد ثبت ما ہذا الا غلط و شطط و ہذا واضح جدا فاتضح بحمد للہ ان الروایۃ ضعیفۃ واہیۃ و انہا فی اثبات ما ریم منہا غیر مغنیۃ و لا کافیۃ ہکذا ینبغی التحقیق و للہ تعالیٰ و لی التوفیق۔

सानियन : अगर बिल फ़र्ज़ सहीह भी होती तो इन अहादीस ए जलीला जज़ीला सहाह असह के मुख़ालिफ़ थी लिहाज़ा मरदूद होती न कि ख़ुद सहीह भी नहीं अब उनके मुक़ाबिल क्या इलतिफ़ात के क़ाबिल।

अक़ूल : जवाब ए अव्वल ब नज़र ए सनद था यह ब लिहाज़ ए मतन है यानी अगर सनदन सहीह भी होती तो मतनन शाज़ थी और ऐसा शुज़ूज़ क़ादिह ए सेहत यूँ भी ज़ईफ़ रहती अबकि सनदन भी सहीह नहीं ख़ास मुनकिर है और बहरहाल मरदूद व ना मोतबर। यह जवाब भी उलमा ए ममदूहीन ने दिया और इमाम क़सतलानी व शेख़ ए मुहक़्क़िक़ ने भी इसकी तरफ़ इशारा किया। ख़मीस में बाद इबारत ए मज़कूरा इमाम बैहक़ी से है,

و الصحیح من الحدیث قد اثبت لابی طالب بوفاۃ علی الکفر و الشرک کما رویناہ فی صحیح البخاری ۔

यानी हदीस ए सहीह अबू तालिब का कुफ़्र व शिर्क पर मरना साबित कर रही है जैसा कि सहीह बुख़ारी में मौजूद। बि ऐनिही इसी तरह मुवाहिब में है। उम्दा में बाद इबारत ए मज़कूरा और ज़रक़ानी में इमाम हाफ़िज़ुश शान से है,

و لو کان صحیحا العارضه حدیث الباب لانه اصح منه فضلا عن انه لم یصح ۔

इसाबा में बाद कलाम ए साबिक़ है,

و علی تقدیر ثبوتها فقد عارضها ما هو اصح منها ۔

फिर हदीस ए दुवम लिखकर फ़रमाया,

فھذا ھو الصحیح الذی یرد الروایۃ التی ذکرھا ابن اسحٰق ۔

यह हदीस ए सहीह रिवायत इब्न ए इसहाक़ को रद कर रही है। शरह हमज़िया की इबारत ऊपर गुज़री,

صرائح الاحادیث المتفق علی صحتھا ترد ذلك ۔

सरीह हदीसें जिनकी सेहत पर इत्तिफ़ाक़ है, उसे रद कर रही हैं। मदारिजुन नबूवत में है,

در احادیث واخبار اسلام وے ثبوت نیافتہ جز انچہ در روایت ابن اسحٰق آمدہ کہ وے اسلام آورد نزدیک بوقت مرگ وگفتہ کہ چوں قریب شد موت وے وعباس گفت یاابن اخی واللہ بتحقیق گفت برادر من کلمہ راکہ امر کردی تو او رابدان کلمہ ودر روایتے آمدہ کہ آنحضرت گفت من نشنیدم بآنکہ حدیث صحیح اثبات کردہ است برائے ابو طالب کفر رااھ مختصراً۔

यह कलाम हज़रत शेख़ रहमहु उल्लाहि तआला का है और फ़क़ीर ग़ुफ़िर अल्लाहु तआला लहु यहाँ हामिश मदारिज पर दो हाशिए लिखे जिनकी नक़ल ख़ाली अज़ नफ़्अ नहीं।

اول قول شیخ جز آنچہ در روایت ابن اسحٰق آمدہ بر بریں عبارت۔اقول ایں استثناء منقطع ست ائمہ فن ہمچو امام بیہقی وامام ابن حجر عسقلانی وامام عینی وامام ابن حجر مکی وغیر ھم تصریح کردہ اند بضعف ایں روایت زیرا کہ در وراوی مبہم واقع شدہ باز بمخالف صحاح منکر ست وشیخ در آخر کلام خود ارشارہ بضعف او ممکن کہ بآنکہ حدیث صحیح اثبات کردہ است الخ معلوم شد کہ

این صحیح نیست۔دوم قول شیخ ودر روایتے آمدہ پر بایں الفاظ اقول ایں لفظ ایہام میکند آں را که ایں جادو روایت ست و روایت مذکورہ ابن اسحٰق عاری ست از ذکر رد فرمودن نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بقول مبارکش لم اسمع حالانکہ نہ چناں ست بلکہ ایں تتمہ ہماں روایت ابن اسحٰق ست بریں معنی آگاہ باید بود۔

सालिसन : ख़ुद क़ुरआन ए अज़ीम इसे रद फ़रमा रहा है अगर इस्लाम पर मौत होती सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इसतग़फ़ार से क्यों मुमानिअत आई। यह जवाब हाफ़िज़ुश शान का है और इसे ख़मीस में भी ज़िक्र किया। इसाबा में इबारत ए मज़कूरा क़रीबा है,

اذ لو کان قال کلمة التوحید ما نهی الله تعالی نبیه صلی الله تعالی علیه وسلم عن الاستغفار له۔

अक़ूल : इसतग़फ़ार से नही कुफ़्र में सरीह नहीं, हुज़ूर सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इबतिदा ए इस्लाम में मय्यत ए मदयून के जनाज़ा पर नमाज़ पढ़ने से ममनूअ थे।

उलमा ए मुताख़िरिन ने हदीस

استأذنت ربی ان استغفر لامی فلم یأذن لی۔

का यही जवाब दिया है, इसतिदलाल इसी आयत ए करीमि के लफ्ज़

للمشرکین

व लफ्ज़

اصحٰب الجحیم

से औला व अनसब है अगर कलमा ए इस्लाम पर मौत होती तो रब्बुल इज़्ज़त असहाब ए नार से क्यों ठहराता, ला जरम यह रिवायत बे असल है।

राबिअन : अक़ूल : इसमें एक इल्लत और है, हदीस ए सहीह चहारुम देखिए, ख़ुद यही अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हु जिनसे यह रिवायत ज़िक्र की जाती है, मौत ए अबी तालिब के बाद हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से पूछते हैं, या रसूल अल्लाह! हुज़ूर ने अपने चचा अबू तालिब को भी कुछ नफ़्अ दिया, वह हुज़ूर का ग़मख़्वार व तरफ़दार था। इरशाद हुआ। हमने उसे सरापा जहन्नम में ग़र्क़ पाया, इतनी तख़फ़ीफ़ फ़रमा दी कि टख़नों तक आग है, मैं न होता तो असफ़लुस साफ़िलीन उसका ठिकाना था। सुबहान अल्लाह! अगर अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हु अपने कानों से मरते वक़्त कलमा ए तौहीद पढ़ना सुनते तो इस सवाल का क्या महल था, वह न जानते थे कि

الاسلام یجب ما قبلہ۔

मुसलमान हो जाना गुज़रे हुए सब आमाल ए बद को ढा देता है। क्या वह न जानते थे कि अख़ीर वक़्त जो काफ़िर मुसलमान होकर मरे बे हिसाब जन्नत में जाए,

من قال لا الہ الا اللہ دخل الجنۃ۔

और फिर सवाल में क्या अर्ज़ करते हैं वही पुराने क़िस्से नुसरत व यारी व हिमायत व ग़मख़्वारी, यह नहीं कहते, या रसूल अल्लाह! वह

तो कलमा ए इस्लाम पढ़कर मरा है। यह पूछते हैं कि हुज़ूर ने उसे भी कुछ नफ़्अ बख़्शा। यह नहीं अर्ज़ करते कि कौन से आला दरजात ए जन्नत अता फ़रमाए। वह हालत ए सहीह में होते तो अंदाज़ ए सवाल यूँ होता कि या रसूल अल्लाह! अबू तालिब का ख़ातिमा ईमान पर हुआ और हुज़ूर के साथ उनकी ग़ायत महब्बत व कमाल हिमायत तो क़दीम से थी अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने फिरदौस ए आला का कौन सा महल उन्हें करामत फ़रमाया तो नज़र ए इंसाफ़ में यह सवाल ही उस रिवायत की बे असली पर क़रीना ए वानिहा है और जवाब तो जो इरशाद हुआ ज़ाहिर है।

و العیاذ باللہ تعالی ارحم الراحمین۔

यह जवाब फ़क़ीर ग़ुफ़िर अल्लाहु तआला लहु ने अपने फतवा ए साबिक़ा मुख़्तसरा में ज़िक्र किया था, अब शरह ए मुवाहिब में देखा कि अल्लामा ज़रक़ानी ने भी इसी की तरफ़ ईमा किया, फ़रमाते हैं,

فی سوال العباس عن حاله دلیل علی ضعف روایة ابن اسحٰق لانه لو کانت الشهادة عنده لم یسأل لعلمه بحاله۔

अक़ूल : यूँ ही इब्न ए अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा जिनकी तरफ़ इस रिवायत की निस्बत की जाती है अलावा उस तफ़सीर के जो आयत ए सालिसा में उनसे मर्वी ख़ुद ब सनद ए सहीह मालूम कि वह हुज़ूर पुरनूर सय्यिद ए यौमुन नुशूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अबू तालिब के बारे में वह इरशाद ए पाक हदीस ए हशतुम में सुन चुके हैं जिसमें नारी होने की सरीह तसरीह है, यह रिवायत अगर सहीह होती तो इसका मुक़तज़ा यह था कि इब्न ए

अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा अबू तालिब को नाजी जानें कि इन उमूर में नस्ख़ व तग़य्युर को राह नहीं मगर लाज़िम ब हुक्म ए हदीस ए सहीह मुस्लिम बातिल तो मलज़ूम भी हिलया ए सेहत से आतिल,

فافهم۔

ख़ामिसन : यक़ीनन मालूम कि अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हु उस वक़्त तक मुशर्रफ़ ब इस्लाम न हुए थे, कहीं ग्यारह बरस बाद फ़तह ए मक्का में मुसलमान हुए और उसी रिवायत में है कि हुज़ूर सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अबू तालिब का कलमा पढ़ना न सुना और उनकी अर्ज़ पर भी इत्मिनान न फ़रमाया, यही इरशाद हुआ कि हमने न सुना, अब न रही मगर एक शख़्स की शहादत जो अदालत दरकिनार गवाही देते वक़्त मुसलमान भी नहीं, वह शरअन किस क़ायदा व क़ानून से क़ाबिल ए क़बूल या लाइक़ ए इल्तिफ़ात असहाब ए उक़ूल हो सकती है।

अक़ूल : पहले जवाबों का हासिल सनदन या मतनन रिवायत की तज़ईफ़ थी, इस जवाब में उसे हर तरह सहीह मानकर कलाम है कि अब भी इसबात ए मुद्दई से मस नहीं, इससे यह साबित हुआ कि अबू तालिब ने कलमा पढ़ा बल्कि इस क़दर मालूम हुआ कि अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी ग़ैर इस्लाम की हालत में ऐसा बयान किया फिर इससे क्या होता है। यह जवाब इमाम सुहेली ने रौज़ुल उनुफ़ में इरशाद फ़रमाया और उनके बाद इमाम ऐनी व इमाम क़सतलानी ने ज़िक्र किया।

उम्दा में है,

قال السهیلی ان العباس قال ذلك فی حال کونه علی غیر الاسلام و لو اداها بعد الاسلام لقبلت منه ۔

अक़ूल : व बिल्लाहित तौफ़ीक़, ख़ुद इसी रिवायत का बयान कि सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उनकी अर्ज़ पर यही फ़रमाया कि हमारे मसामिअ क़ुदसिया तक न आया। दलील वाज़ेह है कि हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उनके बयान पर इत्मिनान न फ़रमाया, उस गवाही को मक़बूल व मोतबर न ठहराया वर्ना क्या अक़्ल ए सलीम क़बूल करती है कि हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को जिसके इस्लाम में इस दर्जा कोशिश ए बलीग़ हो, नफ़्स ए अन्फ़स ने इस हद शिद्दत फ़रमाइ जब वह अम्र ए अज़ीम महबूब वुक़ूअ में आई ऐसे सहल लफ्ज़ों में जवाब दे दिया जाए, ला जरम इस इरशाद का यही मफ़ाद कि तुम्हारे कहने पर क्या एतमाद, हम सुनते तो ठीक था, यह सरीह रद ए शहादत है, तो जो गवाही ख़ुदा व रसूल रद फ़रमा चुके उसका क़बूल करने वाला कौन।

و بهذا التحقیق الانیق استنار و لله الحمد ان الامام العینی لقد احسن اذ اقتصر فی نقل کلام الامام السهیلی علی ما مر و نعما فعل اذ لم یتعد الی ما تعدی الیه الامام القسطلانی و تبعه العلامة الزرقانی حیث اثرا کلامه برمته واقرا علیه هذا لفظهما (اجیب) کما قال السهیلی فی الروض (بان شهادة العباس لابی طالب لو اداها بعد ما اسلم

كانت مقبولة و لم ترد) شهادته (يقول عليه الصلوة و السلام لم اسمع

لان الشاهد العدل اذا قال سمعت و قال من هو اعدل منه لم اسمع

اخذ بقول من اثبت السماع) قال السهيلی لان عدم السماع يحتمل

اسبابا منعت الشاهد من السمع (و لكن العباس شهد بذلك قبل ان

يسلم) فلا تقبل شهادته اه اقول فليس الكلام فی ان عباسا اثبت و

النبی صلی الله تعالی عليه وسلم نفی فهما شهادتان جاء تا عندنا

احدهما تثبت و الاخری تنفی فتقدم التی تثبت لو كان صاحبها عدلا و

معاذ الله ان تقدم علی قوله صلی الله تعالی عليه وسلم لم يقبل شهادة

العباس و لم يركن اليها فهو صلی الله تعالی عليه وسلم قاض لا شاهد

اٰخر و انما الشاهد العباس وحده فاذا لم يقبلها النبی صلی الله تعالی

عليه وسلم فمن يقبلها بعده هذا ماعندی و انا فی عجب عاجب هٰهنا

من كلام هٰؤلاء الاعلام الاكابر فامعن النظر لعل له معنی قصرت عنه

يد فهمی القاصر۔

यह अजवबा ए उलमा हैं और बिहम्दिल्लाह काफ़ी व वाफ़ी व साफ़ी हैं। व अना अक़ूल व बिल्लाहित तौफ़ीक़।

सादिसन : हम तसलीम करते हैं कि रिवायत इन्हीं अहादीस ए सहीहा की मिस्ल सनदन व मतनन हर तरह आला दर्जा की सहीह और शहादत ए अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हु भी ब वजह ए कमाल मक़बूल व नजीह फिर भी न मुसतदिल को नाफ़ेअ न कुफ़्र ए अबी तालिब की असलन दाफ़ेअ, आख़िर जब ब हुक्म ए अहादीस ए

जलीला, आयत ए क़ुरआनिया मुशरिक व नारी बता रही है तो यह किसी के मिटाए मिटता नहीं। यह दूसरी हदीस कि फ़र्ज़न उसी पल्ला की सहीह व जलील है सिर्फ़ इतना बताती है कि अबू तालिब ने अख़ीर वक़्त ला इलाहा इल्लल्लाह कहा, यह नहीं बताती कि वह वक़्त क्या था, आख़िर वक़्त दो हैं, एक वह कि हुनूज़ पर्दे बाक़ी हैं और यह वक़्त, वक़्त ए क़बूल ए ईमान है, दूसरा वह हक़ीक़ी आख़िर जब हालत ए ग़रग़रा हो, पर्दे उठ जाएं, जन्नत व नार पेश ए नज़र हो जाएं,

يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ۔

का महल न रहे, काफ़िर का उस वक़्त इस्लाम लाना बिल इज्मा मरदूद व ना मक़बूल है।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फ़रमाता है,

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاسَنَا سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ۔

रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं,

ان اللہ یقبل توبۃ العبد ما لم یغرغر رواہ الحمد و الترمذی و حسنہ و ابن ماجہ و الحاکم و ابن حبان و البیھقی فی الشعب کلھم عن سیدنا عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالی عنھما۔

अब अगर वक़्त ए अव्वल कहना मानते हैं तो आयत ए क़ुरआनिया मअ उन अहादीस ए सहीहा के इस हदीस ए सहीह मफ़रूज़ से मुनाक़िज़ होगी और किसी न किसी सहीह हदीस को रद के बग़ैर

चारा न मिलेगा और अगर वक़्त ए दुवम पर मानते हैं तो आयत व अहादीस सब हक़ व सहीह ठहरते हैं और तनाक़ुज़ व तआरुज़ बे तकल्लुफ़ दफ़्अ हो जाता है, कलमा पढ़ा और ज़रूर पढ़ा मगर कब, उस वक़्त जबकि वक़्त न रहा था लिहाज़ा हुक्म शिर्क व नार बरक़रार रहा।

قال اللہ تعالی، حَتّٰۤی اِذَاۤ اَدۡرَکَہُ الۡغَرَقُ قَالَ اٰمَنۡتُ اَنَّہٗ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا الَّذِیۡۤ اٰمَنَتۡ بِہٖ بَنُوۡۤا اِسۡرَآءِیۡلَ وَ اَنَا مِنَ الۡمُسۡلِمِیۡنَ ۔ آٰلۡئٰنَ وَ قَدۡ عَصَیۡتَ قَبۡلُ وَ کُنۡتَ مِنَ الۡمُفۡسِدِیۡنَ ۔

सूरत ए ऊला ज़ाहिरुल बुतलान लिहाज़ा शिक़ ए अख़ीर ही लाज़िमुल इज़आन और फ़िल वाक़ेअ अगर यह रिवायत मुताबिक़ वाक़ेअ थी तो क़तअन यही सूरत वाक़ेअ हुई और वह ज़रुर क़रीन ए क़यास भी है, हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उनके क़रीब ए मर्ग ही जलवा अफ़रोज़ हुए हैं, इसी हालत में कुफ़्फ़ार ए क़ुरैश से वह मुहावरात हुए, सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने बार बार ब इसरार दावत ए इस्लाम फ़रमाइ, कुफ़्फ़ार ने मिल्लत ए कुफ़्र पर क़ाइम रहने में जान लड़ाई, आख़िर पिछला जवाब वह दिया कि अबू तालिब मिल्लत ए जाहिलियत पर जाता है, यहाँ तक बातचीत की ताक़त थी अब सीने पर दम आया, पर्दे उठे, ग़ैब सामने आया, उस नार ने जिस पर आर को इख़्तियार किया था अपनी मुहीब सूरत से मुंह दिखाया,

ليس الخبر كالمعاينة۔

अब खुला कि यह बला झेलने की नहीं, डूबता हुआ सहारा पकड़ता है, अब ला इलाहा इल्लल्लाह की क़दर आई, कहना चाहा ताक़त न पाई, आहिस्ता लबों को जुम्बिश हुई मगर बे सूद कि वक़्त निकल चुका था।

انا للہ و انا الیہ راجعون و لا حول و لا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔

तो हज़रत अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हु भी सच्चे कि कलमा पढ़ा और क़ुरआन व हदीस तो क़तअन सच्चे कि हुक्म ए कुफ्र ब दस्तूर रहा। वल इयाज़ु बिल्लाहि रब्बिल आलामीन।

साबिअन : इससे भी दर गुज़रिए, यह भी माना कि हालत ए ग़रग़रा से पहले ही पढ़ा है फिर हज़रत अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हु तो ज़ाहिर ही की गवाही देंगे, दिल के हाल का आलिम ख़ुदा है, क्या अगर कोई शख़्स रोज़ाना लाख बार कलमा पढ़े और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल उसे काफ़िर बताए तो हम उसके कलमा पढ़ने को देखेंगे या अपने रब अज़्ज़ा व जल्ल के इरशाद को। ईमान ज़बान से कलमा ख़्वानी का नाम नहीं, जब दिलों का मालिक उसके कुफ्र पर हाकिम तो क़तअन साबित कि उसके क़ल्ब में इज़आन व इस्लाम नहीं, आख़िर न सुना कि जीते जागते तंदुरुस्तों के बड़ी से बड़ी क़सम खाकर,

نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ۔

कहने पर क्या इरशाद हुआ,

وَاللّٰهُ يَعلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ۔

ग़रज़ लाख जतन किजिए आयत ए बराअत से बराअत मिले यह शुदनी नहीं रहेगी,

ہمان آش در کاسہ کہ تَبَیَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصحٰبُ الْجَحِيْمِ ۔و العياذ بالله رب العٰلمين اللهم ارحم الرحمين صل وسلم و بارك على السيد الامين الاتى من عندك بالحق المبين اللهم بقدرتك علينا وفاقتنا اليك ارحم عجزنا يا ارحم الراحمين امين امين امين و الحمد لله رب العلمين لا اله الا الله عدة للقاء الله محمد رسول الله وديعة عند الله و لا حول و لا قوة الا بالله و صلى الله تعالى على سيدنا محمد و اٰله اجمعين و الحمد الله رب العٰلمين ۔

बिहम्दिल्लाह इज़ाहत ए शुबहात से भी बर वजह अहसन फ़राग़ पाया।

وھناک شبھة اخر او ھن واھون لم نوردھا اذلم تعرض ولم تعرف فلا نطیل الکلام بایرادھا و لنطوھا علی غرھا لمیعادھا۔

अब बक़िया सवाल का जवाब लिजिए और इस रिसाला में जिन अइम्मा व उलमा व कुतुब से यह मसअला साबित किया आख़िर में उनके असमा शुमार कर दीजिए कि जिसे रिसाला देखने में काहिली आए उन नामों ही को देखकर ख़िलाफ़ से हाथ उठाए लिहाज़ा तीन फ़सल का वस्ल और मुनासिब कि

تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ۔

जलवा दिखाए।

फ़सल ए हशतुम (8)

जब अबू तालिब का कुफ़्र अदिल्ला कन नहार से आशकार तो रदि अल्लाहु तआला अन्हु कहने का क्योंकर इख़्तियार, अगर इख़्तियार है तो अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल पर इफ़्तिरा, कुफ़्फ़ार को रज़ा ए इलाही से क्या बहरा और अगर दुआ है,

كما هو الظاهر۔

तो दुआ बिल मुहाल हज़रत ज़िल जलाल से मआज़ अल्लाह इसतिह्ज़ा। ऐसी दुआ से हुज़ूर सरवर ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने नही फ़रमाइ,

كما فى الصحيحين و قد بيناه فى رسالتنا ذيل المدعاء لاحسن الوعاء

التى ذيلنا بها رسالة احسن الوعاء لآداب الدعاء لخاتمة المحققين

سيدنا الوالد قدس سره الماجد۔

उलमा ने काफ़िर के लिए दुआ ए मग़फ़िरत पर सख़्त अशद हुक्म सादिर फ़रमाया और उसके हराम होने पर तो इज्मा है फिर दुआ ए रिज़वान तो उससे भी अरफ़अ व आला।

فان السيد قد يعفو عن عبده و هو عند غير راض كما ان العبد ربما

يحب سيده و هو على امره غير ماض و حسبنا الله و نعم الوكيل۔

इमाम मुहम्मद मुहम्मद मुहम्मद हल्बी हिलया में फ़रमाते हैं,

صرح الشیخ شہاب الدین القرافی المالکی بان الدعاء بالمغفرۃ للکافر کفر لطلبہ تکذب اللہ تعالی فیما اخبر بہ و لھذا قال المصنف وغیرہ ان کان مؤمنین ۔

यानी इमाम शहाब क़र्राफ़ी मालिकी ने तसरीह फ़रमाइ कि कुफ़्फ़ार के लिए दुआ ए मग़फ़िरत करना कुफ़्र है कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने जो ख़बर दी उसका झूठा करना चाहता है इसलिए मुनिया वग़ैरह कुतुब ए फ़िक़्ह में क़ैद लगा दी कि माँ बाप के लिए दुआ ए मग़फ़िरत करे बशर्ते कि वह मुसलमान हों फिर एक वरक़ के बाद फ़रमाया कि,

تقدم ان کفر ۔

ऊपर बयान हो चुका कि यह कुफ़्र है।

रद्दुल मोहतार में है,

الدعاء بہ کفر لعدم جوازہ عقلاً و لا شرعاً و لتکذیب النصوص القطعیۃ بخلاف الدعاء للمؤمنین کما علمت فالحق ما فی الحلیۃ ۔

दुर्रे मुख़तार में है,

الحق حرمۃ الدعاء بالمغفرۃ للکافر ۔

हक़ यह है कि काफ़िर के लिए दुआ ए मग़फ़िरत हराम है। इसी तरह बहरुर राइक़ में है।

अक़ूल :

و ما نحا الیه العلامة الشامی من عدم جواز عفو الکفر عقلا فانما تبع فیه الامام النسفی صاحب عمدة الکلام و شر ذمة قلیلة من اهل السنة و الجمهور علی امتناعه شرعا و جوازه عقلا کما فی شرح المقاصد و المسامرة و غیرهما و به تقضی الدلائل فهو الصحیح و علیه التعویل فاذن الحق ما ذهب الیه البحر و تبعه فی الدر و تمام الکلام فی هذا المقام فیما علقناه علی رد المحتار۔

हाँ अबू लहब व इबलीस लअनहुम उल्लाहि के मिस्ल कहना महज़ इफ़रात और ख़ून ए इंसाफ़ करना है। अबू तालिब की उम्र ख़िदमत व किफ़ालत व नुसरत व हिमायत ए हज़रत ए रिसालत अलैहि व अला आलिहिस सलातो व तहिया में कटी और यह मलाइना दर पर्दा व एलानिया दर पै ईज़ा व इज़रार रहे, कहाँ वह जिसका वज़ीफ़ा मदह व सताइश हो और कहाँ वह शक़ी जिसका विर्द ज़म व निकूहश हो, एक अगरचे ख़ुद महरूम और इस्लाम से मसरूफ़ और दूसरा मरदूद व मुतमर्रिद व अदू व मुआनिद हमा तन कस्र ए बैज़ा ए इस्लाम में मशग़ूफ़।

ع۔ببیں تفاوت رہ از کجاست تا بہ کجا۔

आख़िर न देखा जो सहीह हदीस में इरशाद हुआ कि अबू तालिब पर तमाम काफ़िर से कम इक़ाब है और यह अशक़िया उनमें हैं जिन पर अशद्दुल अज़ाब है, अबू तालिब के सिर्फ़ पांव आग में हैं और यह मलाइना उनमें कि,

لَهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِنَ النَّارِ و من تَحتِهِمْ ظُلَلٌ۔

उनके ऊपर आग की तहें हैं और उनके नीचे आग की तहें।

لَهُمْ مِن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ۔

उनके नीचे आग का बिछौना और ऊपर आग के लिहाफ़। सरापा आग, हर तरफ़ से आग। वल इयाज़ु बिल्लाहि रब्बिल आलामीन।

बल्कि दोनों का सबूत ए कुफ़्र भी एक सा नहीं, अबू तालिब के बाब में अगरचे क़ौल ए हक़ व सवाब वही कुफ़्र व अज़ाब और उसका ख़िलाफ़ शाज़ व मरदूद व बातिल व मतरूद फिर भी इस हद का नहीं कि मआज़ अल्लाह ख़िलाफ़ पर तकफ़ीर का एहतिमाल हो और इन आदा इल्लाह का काफ़िर व अबदी जहन्नमी होनी तो ज़रुरियात ए दीन से है जिसका मुन्किर ख़ुद जहन्नमी काफ़िर, तो फ़रीक़ैन का न कुफ़्र यकसां, न सबूत यकसां, न अमल यकसां, न सज़ा यकसां, हर जगह फ़र्क़ ए ज़मीन व आसमान फिर मुमासलत कहाँ।

نسأل الله سلوك سوى الصراط و نعوذ بالله من التفريط و الافراط۔

फ़सल ए नहुम (9)

उन अइम्मा ए दीन व उलमा ए मोतमदीन के ज़िक्र ए असमाए तय्यबा में जिन्होंने कुफ़्र ए अबी तालिब की तसरीह व तसहीह फ़रमाइ और उनके इरशादात की नक़्ल इस रिसाला में गुज़री।

فمن الصحابة :

सहाबा :

(1) अमीरुल मोमिनीन सिद्दीक़ ए अकबर
(2) अमीरुल मोमिनीन फ़ारुक़ ए आज़म
(3) अमीरुल मोमिनीन अली मुर्तज़ा
(4) हिबरुल उम्मह सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास
(5) हाफ़िज़ुस सहाबा सय्यिदुना अबू हुरैरा
(6) सहाबी इबन ए सहाबी सय्यिदुना मुसीब इब्न ए हुज़्न क़ुरैशी मख़ज़ूमी
(7) हज़रत सय्यिदुना अब्बास अम्म ए रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम
(8) सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी
(9) सय्यिदुना जाबिर इब्न ए अब्दुल्लाह अंसारी
(10) सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्न ए उमर फ़ारुक़
(11) सय्यिदुना अनस इब्न ए मालिक, ख़ादिम ए रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम
(12) हज़रत सय्यिदुतना उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा। रदि अल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।

पहले छह हज़रात से तो ख़ुद उनके अक़वाल गुज़रे और अनस व इब्न ए उमर रदि अल्लाहु तआला अन्हुम की तक़रीर और बाक़ी चार ख़ुद हुज़ूर पुरनूर सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इरशाद बयान फ़रमाते हैं और पुर ज़ाहिर कि यहाँ अपने

कहने से नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इरशाद बताना और भी अबलग़ है।

و من التابعين :

ताबईन :

(13) आदम ए आले अबा ज़ैनुल आबिदीन अली इब्न ए हुसैन इब्न ए अली मुर्तज़ा रदि अल्लाहु तआला अन्हुम व कर्राहुम वुजूहुहुम
(14) इमाम अता इब्न ए अबी रबाह उस्ताज़ सय्यिदुना इमामुल आज़म रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा
(15) इमाम मुहम्मद इब्न ए काब क़र्ज़ी कि अजिल्ला ए अइम्मा ए मुहद्दिसीन व मुफ़स्सिरीन ए ताबाईन से हैं
(16) सईद इब्न ए मुहम्मद अबू सफ़र ताबई इब्न ए ताबई इब्न ए सहाबी, नबीरा ए सय्यिदुना जुबैर इब्न ए मुतअम रदि अल्लाहु तआला अन्हु
(17) इमामुल अइम्मा सिराजुल अइम्मा सय्यिदुना इमाम ए आज़म अबू हनीफ़ा रदि अल्लाहु तआला अन्हु।

و من تبع تابعين :

तबअ ताबाईन :

(18) आलिमुल मदीना इमाम दारुल हिजरत सय्यिदुना इमाम मालिक रदि अल्लाहु तआला अन्हु
(19) मुहर्रिरुल मज़हब मरजअ उद दुनया फ़िल फ़िक़्ह वल इल्म सय्यिदुना इमाम मुहम्मद रदि अल्लाहु तआला अन्हु

(20) इमाम ए तफ़सीर मुक़ातिल बल्ख़ी
(21) सुल्तान ए इस्लाम ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन जिनके आने की सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने बशारत दी थी कि,

منا السفاح و منا المنصور و منا المھدی رواہ الخطیب و ابن عساکر وغیرھما بطریق سعید بن جبیر عنہ قال السیوطی قال الذھبی اسنادہ صالح۔

आनी इमाम अबू जाफ़र मंसूर नबीर ज़ादा इब्न ए अम्म ए रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम। बल्कि दो हदीसों में यही अलफ़ाज़ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से आए,

رواہ کذلك الخطیب من طریق الضحاك عن ابن عباس و ابن عساکر فی ضمن حدیث عن ابی سعید الخدری رضی اللہ تعالی عنھم رفعاہ الی النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم۔ و من اتباع التبع و من یلیھم :

(22) इमामुद दुनया फ़िल हिफ़्ज वल हदीस अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्न ए इस्माइल बुख़ारी
(23) इमाम अजल्ल अबू दाऊद सुलेमान इब्न ए अशअस सजिसतानी
(24) इमाम अब्दुर रहमान अहमद इब्न ए शुएब नसाई
(25) इमाम अबू अब्दुल्लाह इब्न ए यज़ीद इब्न ए माजा क़ज़वीनी। यह चारों अइम्मा असहाब ए सहाह मशहूरा हैं। और यही तबक़ा ए अख़ीरा अब्दुल्लाह इब्न ए मो'तज़ का है।

و من بعدهم من المفسرين :

मुफ़स्सिरीन :

(26) इमाम मुहीउस सुन्नह अबू मुहम्मद हुसैन इब्न ए मसऊद फ़राअ बग़वी
(27) इमाम अबू इस्हाक़ ज़ज्जाज इब्राहिम इब्न ए सरी
(28) जारुल्लाह महमूद इब्न ए उमर ख़वारज़्मी ज़मख़शरी
(29) अबुल हसन अली इब्न ए अहमद वाहिदी नीशापुरी साहिब ए बसीत व वसीत व वजीज़
(30) इमाम अजल्ल मुहम्मद इब्न ए उमर फ़ख्रुद्दीन राज़ी
(31) क़ाज़ीउल क़ुज़्ज़ात शहाबुद्दीन इब्न ए ख़लील ख़ूबी दिमिश्क़ी मुकम्मलुल कबीर
(32) अल्लामा क़ुतबुद्दीन मुहम्मद इब्न ए मसऊद इब्न ए महमूद इब्न ए अबिल फ़तह सैराक़ी शिफ़ार साहिब ए तक़रीब
(33) इमाम नासिरुद्दीन अबू सईद अब्दुल्लाह इब्न ए उमर बैज़ावी
(34) इमाम अल्लामतुल वजूद मुफ़्ती ए मुमालिक ए रुमीया अबुस सऊद इब्न ए मुहम्मद इमादी
(35) अल्लामा अलाउद्दीन अली इब्न ए मुहम्मद इब्न ए इब्राहीम बग़दादी सूफ़ी साहिब ए तफ़सीर ए लुबाब शहीर बिहि ख़ाज़िन
(36) इमाम जलालउद्दीन मुहम्मद इब्न ए अहमद महल्ली
(37) इमाम सुलेमान जमल।

وغيرهم ممن ياتى و من المحدثين و الشارحين :

मुहद्दीसीन व शारीहीन :

(38) इमाम अजल्ल अहमद इब्न ए हुसैन बैहक़ी

(39) हाफ़िज़ुश शाम अबुल क़ासिम अली इब्न ए हुसैन इब्न ए हिबतुल्लाह दिमिश्क़ी शहीर इब्न ए असाकिर

(40) इमाम अबुल हसन अली इब्न ए ख़ल्फ़ मारुफ़ ब इब्न ए बताल मग़रिबी शारह ए सहीह बुख़ारी

(41) इमाम अबुल क़ासिम अब्दुर रहमान इब्न ए अहमद सुहेली

(42) इमाम हाफ़िज़ुल हदीस अल्लामतुल फ़िक़्ह अबू ज़करिया याहया इब्न ए शर्फ़ नववी

(43) इमाम अबुल अब्बास अहमद इब्न ए उमर इब्न ए इब्राहीम क़ुरतबी शारह ए सहीह मुस्लिम

(44) इमाम अबुस सआदात मुबारक इब्न ए मुहम्मद अबिल करम मारुफ़ ब इब्न ए असीर जज़री साहिब ए निहाया व जामिउल उसूल

(45) इमाम जलील मुहिबुद्दीन अहमद इब्न ए अब्दुल्लाह तिबरी

(46) इमाम शर्फ़ुद्दीन हसन इब्न ए मुहम्मद तय्यबी शारह ए मिशकात

(47) इमाम शमसुद्दीन मुहम्मद इब्न ए युसुफ इब्न ए अली किरमानी शारह ए सहीह बुख़ारी

(48) अल्लामा मज्दुद्दीन मुहम्मद इब्न ए याक़ूब फ़िरोज़ाबादी साहिबुल क़ामूस

(49) इमाम हाफ़िज़ुश शान अबुल फ़ज़्ल शहाबुद्दीन अहमद इब्न ए हजर असक़लानी

(50) इमाम जलील बदरुद्दीन अबू मुहम्मद महमूद इब्न ए अहमद ऐनी।

(51) इमाम शहाबुद्दीन अबुल अब्बास अहमद इब्न ए इदरीस क़र्राफ़ी साहिब ए तनक़ीहुल उसूल

(52) इमाम ख़ातिमुल हुफ़्फ़ाज़ जलालुल मिल्लत वद् दीन अबुल फ़ज़्ल अब्दुर रहमान इब्न ए अबी बक्र सुयूती

(53) इमाम शहाबुद्दीन अबुल अब्बास अहमद इब्न ए ख़तीब क़स्तलानी शारह ए सहीह बुख़ारी

(54) अल्लामा अब्दुर रहमान इब्न ए अली शैबानी तलमीज़ इमाम शमसुद्दीन सख़ावी

(55) अल्लामा क़ाज़ी हुसैन इब्न ए मुहम्मद इब्न ए हुसैन दयार बक्री मक्की

(56) मौलाना अल फ़ाज़िल अली इब्न ए सुल्तान मुहम्मद क़ारी हरवी मक्की

(57) अल्लामा ज़ैनुल आबिदीन अब्दुर रऊफ़ मुहम्मद शमसुद्दीन मनावी

(58) इमाम शहाबुद्दीन अहमद इब्न ए हजर मक्की

(59) शेख़ तक़ीउद्दीन अहमद इब्न ए अली मुक़रीज़ी अख़बारी

(60) सय्यिद जमालुद्दीन अताउल्लाह इब्न ए फ़ज़्लुल्लाह शीराज़ी साहिब रौज़तुल अहबाब

(61) इमाम आरिफ़ बिल्लाह सय्यिदी अलाउल मिल्लत वद् दीन अली इब्न ए हुसामुद्दीन मुतक़्क़ी मक्की

(62) अल्लामा शहाबुद्दीन अहमद ख़िफ़ाजी शारह ए शिफ़ा

(63) अल्लामा अली इब्न ए अहमद इब्न ए मुहम्मद इब्न ए इब्राहीम अज़ीज़ी

(64) अल्लामा मुहम्मद हनफ़ी मुहश्शी अफ़ज़लुल क़ुरा

(65) अल्लामा ताहिर फ़तनी साहिब ए मजमअ बिहारुल अनवार
(66) शेख़ ए मुहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल हक़ इब्न ए सैफ़ुद्दीन बुख़ारी
(67) अल्लामा मुहम्मद इब्न ए अब्दुल बाक़ी इब्न ए युसुफ़ ज़रक़ानी मिस्त्री
(68) फ़ाज़िल इब्न ए मुहम्मद अली सब्बान मिस्त्री साहिब असआफ़ुर राग़िबीन

وغيرهم ممن مضى و يجيئ و من الفقهاء و الاصوليين :

फ़क़हा व उसीलीन :

(69) इमाम अजल्ल शेख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन अली इब्न ए अबी बक्र बुरहानुद्दीन फ़रग़ानी साहिब ए हिदाया
(70) इमाम अबुल बरकात अब्दुल्लाह इब्न ए अहमद हाफ़िज़ुद्दीन नसफ़ी साहिब ए कंज़
(71) इमाम मुहक़्क़िक़ अलल इतलाक़ कमालुद्दीन मुहम्मद इब्निल हुमाम
(72) इमाम जलालुद्दीन करलाली साहिब ए किफ़ाया
(73) इमाम मुहक़्क़िक़ मुहम्मद इब्न ए मुहम्मद इब्न ए मुहम्मद इब्न ए अमीरुल हाज हल्बी
(74) इमाम इब्राहीम इब्न ए मूसा तराबुलुसी मिस्त्री साहिब ए मवाहिबुर रहमान
(75) अल्लामा इब्राहीम इब्न ए मुहम्मद हल्बी शरह ए मुनिया
(76) अल्लामा सअदुद्दीन मसऊद इब्न ए उमर तफ़्ताज़ानी
(77) अल्लामा मुहक़्क़िक़ ज़ैन इब्न ए नुजैम मिस्त्री साहिब ए बहर

(78) मलिकुल उलमा बहरुल उलूम अब्दुल अली मुहम्मद लखनवी
(79) अल्लामा सय्यिद अहमद मिस्री तहतावी
(80) अल्लामा सय्यिद मुहम्मद आफ़न्दी इब्न ए आबिदीन शामी।

وغیرهم ممن تقدم رحمہ اللہ تعالی علمائنا جمیعا من تاخر منهم و من قدم آمین۔

फ़सल ए दहुम (10)

उन किताबों के नाम जिनकी नुक़ूल दर बारा ए अबू तालिब इस रिसाला में मज़कूर हुईं।

कुतुब ए तफ़सीर :

(1) मआलिमुत तन्ज़ील इमाम बग़वी
(2) मदारिकुत तन्ज़ील इमाम नसफ़ी
(3) अनवारुत तन्ज़ील इमाम बैज़ावी
(4) इरशादुल अक़्लिस सलीम इला मज़ायल किताबिल करीम लिल मुफ़्ती इल अल्लामतुल अमावी
(5) कश्शाफ़ हक़ाइक़ुत तन्ज़ील लिल ज़मख़शरी
(6) मफ़ातिहुल ग़ैब लिल इमाम राज़ी
(7) तकमलतुल मफ़ातिह लिश शम्सिल ख़ूबी
(8) जलालैन
(9) फ़ुतुहात ए इलाहिया लिश शेख़ सुलेमान

(10) इनायतुल क़ाज़ी व किफ़ायतुर राज़ी लिल अल्लामा शहाब
(11) मआनील क़ुरआन लिज़ ज़ुजाज
(12) फ़ुतुहुल ग़ैब लित तय्यबी
(13) तक़रीब ए मुख़तसरिल कश्शाफ़ लिल यसराफ़ी
(14) बसीत लिल वाहिदी
(15) लुबाबित तावील फ़ी मआनित तन्ज़ील लिल अल्लामतिल ख़ाज़िन
(16) अल अहकाम लि बयान मा फ़िल क़ुरआन मिनल इबहाम लिल असक़लानी

कुतुब ए हदीस :

(17) सहीह बुख़ारी
(18) सहीह मुस्लिम
(19) सुनन अबी दाऊद
(20) जामेअ तिर्मिज़ी
(21) मुजतबा नसाई
(22) सुनन इब्न ए माजा
(23) मोअत्ता इमाम मालिक
(24) मोअत्ता इमाम मुहम्मद
(25) मुसनद इमाम शाफ़ई
(26) मुसनद इमाम अहमद
(27) शरह ए मआनिल आसार
(28) मिशकातुल मसाबीह

(29) तैसीरुल वुसूल इला जामिइल उसूल
(30) जामेअ सग़ीर
(31) मन्हजुल उम्माल लिल इमाम मुत्तक़ी
(32) कंज़ुल उम्माल लहु
(33) मुन्तख़ब कंज़ुल उम्माल लहु
(34) मुसन्निफ़ अब्दुर रज़्ज़ाक़
(35) मुसन्निफ़ अबी बक्र इब्न ए अबी शैबा
(36) मुसनद अबी दाऊद तयालसी
(37) मुसनद इसहाक़ इब्न ए राहविया
(38) तबक़ात इब्न ए साद
(39) किताब मूसा इब्न ए तारिक़ अबू क़ुर्रह
(40) ज़्यादात ए मग़ाज़ी इब्न ए इसहाक़ लि युनुस इब्न ए बुकैर
(41) सहीह इब्न ए ख़ुज़ैमा
(42) मुन्तफ़ी इब्न ए ज़ूद
(43) मुसनद बज़्ज़ार
(44) मुसनद अबी याला
(45) मोअजम ए कबीर तबरानी
(46) मोअजम औसत लहु
(47) फ़वाइद ए तमाम राज़ी
(48) कामिल इब्न ए अदी
(49) किताबुल जनाइज़ लिल मरूज़ी
(50) किताब ए मक्का लि उमर इब्न ए शाबा
(51) किताब अबी बशर
(52) फ़वाइद ए समविया

(53) मुस्तख़्रज इस्माइल
(54) मुस्तदरक हाकिम
(55) हिलयतुल औलिया लि अबी नईम
(56) सुनन बैहक़ी
(57) दलाइलुन नबूवह
(58) सुनन सईद इब्न ए मंसूर
(59) मुसनद फ़रयाबी
(60) मुसनद अब्द इब्न ए हमीद
(61) तफ़सीर इब्न ए जरीर
(62) तफ़सीर इब्नुल मुन्ज़िर
(63) तफ़सीर इब्न ए अबी हातिम
(64) तफ़सीर अबुश शेख़
(65) तफ़सीर इब्न ए मरदविया
(66) मग़ाज़ी इब्न ए इसहाक़

على ما قررنا و حررنا۔

शुरूह ए हदीस :

(67) मिन्हाज शरह ए मुस्लिम लि नववी
(68) उमदतुल क़ारी शरह ए सहीह बुख़ारी लिल ऐनी
(69) इरशादुस सारी शरह ए सहीह बुख़ारी लिल क़स्तलानी
(70) मिरक़ात शरह ए मिश्कात लिल क़ारी
(71) तैसीर शरह ए जामेअ सग़ीर लिल मनावी

(72) सिराजुल मुनीर शरह ए जामेअ सग़ीर लिल अज़ीज़ी
(73) फ़तहुल बारी शरह ए सहीह बुख़ारी लिल असक़लानी
(74) कवाकिबुद दरारी शरह ए सहीह बुख़ारी लिल किरमानी
(75) मफ़हम शरह ए सहीह मुस्लिम लिल क़रतबी।

कुतुब ए फ़िक़्ह :

(76) हिदाया
(77) काफ़ी शरह ए वाफ़ी किलाहुमा लिल इमाम नसफ़ी
(78) फ़तहुल क़दीर लिल मुहक़्क़िक़
(79) किफ़ाया शरह ए हिदाया
(80) हिलया शरह ए मुनिया लिल इमामिल हल्बी
(81) ग़ुनिया शरह ए मुनिया लिल मुहक़्क़िक़ुल हल्बी
(82) बहर्रुर राइक़ शरह ए कंज़ुद दाइक़
(83) तहतावी अला मिराक़िउल फ़लाह लिल शरनबुलाली (84) रद्दुल मोहतार अला दुर्रे मुख़्तार
(85) बिनाया शरह हिदाया लिल ऐनी
(86) बुरहान शरह ए मवाहिबुर रहमान किलाहुमा लित तराबुलुसी।

कुतुब ए सीअर :

(87) मवाहिबुल लदुन्निया व मिनहा ए मुहम्मदिया
(88) शरह ए मवाहिब लिज़ ज़रक़ानी
(89) सिरातुल मुसतक़ीम लिल मज्द

(90) शरह ए सिरातुल मुसतक़ीम लिश शेख़
(91) मदारिजुन नबूवह लहु
(92) ख़मीस लिद दयार ए बक्री
(93) असआफ़ुर राग़िबीन लिस सब्बान
(94) रौज़तुल अहबाब
(95) तारीख़ इब्न ए असाकिर
(96) रौज़ ए सुहेली
(97) इमताइल असमा लिल मुक़रीज़ी

कुतुब ए अक़ाइद व उसूल व उलूम ए शत्ता :

(98) फ़िक़्हुल अकबर लिल इमाम ए आज़म
(99) शरहुल मक़ासिद लिल अल्लामतिल मातिन
(100) इसाबा तमीज़िस सहाबा लिल इमाम इब्न ए हजर
(101) मसलकुल हुनफ़ा फ़ी वालिदिल मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लिल इमाम सुयूती
(102) अफ़ज़लुल क़ुरा उम्मुल क़ुरा लिल इमाम इब्न ए हजर
(103) शरह ए शिफ़ा लि अली क़ारी
(104) नसीमुर रियाज़ लिल ख़िफ़ाजी
(105) हफ़्नी शरहुल हमज़िया
(106) मजमउल बिहार लिल फ़तनी
(107) फ़वातिहुर रहमूत लि बहरिल उलूम
(108) अत तक़रीर वत तहरीर फ़िल उसूल लिल अल्लामा इब्न ए अमीरुल हाज

(109) निहाया फ़ी ग़रीबुल हदीस लि इब्न ए असीर
(110) शरह ए तनक़ीहुल फ़ुसूल फ़िल उसूल किलाहुमा लिल क़र्राफ़ी
(111) ज़ख़ाइरुल उक़बा फ़ी मनाक़िब ज़विल क़ुर्बा लिल हाफिज़िल मुहिबित तिबरी।

:تذییل

तज़यील :

वह किताबें जिन से इस रिसाला में मदद ली गई :

(112) शरह ए अक़ाइद ए नसफ़ी
(113) शरह ए अक़ाइद ए अदुदी
(114) सीरत इब्न ए हिशाम
(115) इतक़ान फ़ी उलूमिल क़ुरआन
(116) मीज़ानुल ऐतिदाल
(117) तक़रीबुत तहज़ीब
(118) तक़रीब ए इमाम नववी
(119) तदरीब ए इमाम सुयूती
(120) मुसल्लमुस सबूत
(121) दुर्रे ए मुख़्तार
(122) तारीख़ुल ख़ुलफ़ा
(123) तोह्फ़ा इसना अशरिया
(124) सहीह इब्न ए हिब्बान
(125) अलक़ाब ए शिराज़ी
(126) इसतिआब अबू उमर

(127) मारिफ़तुस सहाबा लि अबी नईम
(128) मुसनदुल फ़िरदौस दैलमी
(129) ख़ादिमुल इमाम बदरुद्दीनज़ ज़रकशी
(130) शअबुल ईमान लिल इमामिल बैहक़ी।

ختم اللہ تعالی لنا بالایمان و الآمان آمین آمین الحمد للہ علی

الاختتام و نسألہ حسن الختام ۔

पहले यह सवाल बदायूं से आया था, जवाब में एक मुवजज़ रिसाला चंद वरक़ का लिखा और उसका नाम मोतबरुत तालिब फ़ी शैवन ए अबी तालिब (1292) रखा, अब कि दोबारा अहमदाबाद से सवाल आया और बाज़ उलमा ए बम्बई ने भी इस बारा में तवज्जो ख़ास का तक़ाज़ा फ़रमाया, हसब ए हालत ए राहिना व फ़ुरसत ए हाज़िरा शरह व बस्त काफ़ी को काम में लाया और इसे उस इज्माल ए अव्वल की शरह बनाया नीज़ शरह ए मतालिब व तस्कीन ए तालिब में बिहम्दिल्लाहि तआला हाफ़िल व कामिल पाया लिहाज़ा शरहुल मतालिब फ़ी मबहस ए अबी तालिब (1316) इसका नाम रखा और यही इसकी तारीख़ ए आग़ाज़ व अंजाम।

و الحمد للہ و لی الانعام و افضل الصلوۃ و اکمل السلام علی سیدنا

محمد ھادی الانام و علی اٰلہ و صحبہ الغر الکرام و علینا بھم و لھم

الی یوم القیٰمۃ آمین یا ذا الجلال و الاکرام و اللہ سبحٰنہ و تعالی اعلم

و علمہ جل مجدہ اتم و احکم ۔

العطایا النبویہ فی الفتاوی الرضویہ، جـ 30/29، صـ 749655

हिंदी ज़ुबान में हमारी दूसरी किताबें और रसाइल :

बहारे तहरीर (अब तक 13 हिस्सों में)
अल्लाह त'आला को ऊपरवाला या अल्लाह मियाँ कहना कैसा?
अज़ाने बिलाल और सूरज का निकलना
इश्के मजाज़ी - मुंतख़ब मज़ामीन का मजमुआ
गाना बजाना बंद करो, तुम मुसलमान हो!
शबे मेराज गौसे पाक
शबे मेराज नालैन अर्श पर
हज़रते उवैस क़रनी का एक वाकिया
डॉक्टर ताहिर और वक़ारे मिल्लत
ग़ैरे सहाबा में रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का इस्तिमाल
चंद वाकियाते कर्बला का तहक़ीक़ी जाइज़ा
बिंते हव्वा
सेक्स नॉलेज
हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के वाकिये पर तहक़ीक़
औरत का जनाज़ा
एक आशिक़ की कहानी अल्लामा इब्ने जौज़ी की ज़ुबानी
40 अहादीसे शफा'अत
हैज़, निफ़ास और इस्तिहाज़ा का बयान बहारे शरीअत से
क़ियामत के दिन लोगों को किस के नाम के साथ पुकारा जाएगा?
ज़न और यक़ीन
ज़मीन साकिन है

ABOUT US

Abde Mustafa Official Is A Team From **Ahle Sunnat Wa Jama'at** Working **Since 2014** On The Aim To Propagate
Quraan And Sunnah
Through Electronic And Print Media.

We are :

Writing articles, composing & publishing books, running a special **matrimonial service** for Ahle Sunnat

Visit our official website

www.abdemustafa.in

Books Library

books.abdemustafa.in
about 100+ tehqeeqi pamphlets & books are available in multiple languages.

E Nikah Matrimony

www.enikah.in
there is also a channel on Telegram
t.me/Enikah (Search “E Nikah Service” on Telegram)

Find us on Social Media Networks :

Subscribe us on YouTube @abdemustafaofficial
like and follow us on Facebook & Instagram @abdemustafaofficial
Join our official Telegram Channel t.me/abdemustafaofficial
Books Library on Telegram t.me/abdemustafalibrary
or search “Abde Mustafa Official” on Google
for more details WhatsApp on **+919102520764**

AMO
Abde Mustafa Official